हिंदी कलिका

तीसरा भाग

हिंदी भाषा की पाठ्य पुस्तक

(आठवीं कक्षा के लिए)

विद्यालय और गणशिक्षा विभाग
ओड़िशा सरकार

शिक्षक शिक्षा निदेशालय
तथा राज्य शैक्षिक अनुसंधान
और प्रशिक्षण परिषद
ओड़िशा, भुवनेश्वर

ओड़िशा विद्यालय शिक्षा
कार्यक्रम प्राधिकरण
भुवनेश्वर

हिंदी कलिका
आठवीं कक्षा के लिए पाठ्य पुस्तक

संपादक मंडली
प्रो.डॉ. सत्यनारायण पंडा
डॉ. अजित प्रसाद महापात्र
डॉ. लक्ष्मीधर दाश
श्री विनय कुमार पाठक
श्री आशीष कुमार राय

समीक्षक
प्रो.डॉ. सत्यनारायण पंडा
डॉ. लक्ष्मीधर दाश
श्रीमती पद्मिनी परिड़ा
श्रीमती मिनतीरानी नायक

संयोजक
श्री मानस कुमार नायक

विषय विशेषज्ञ
प्रो.डॉ. सत्यनारायण पंडा

मुख्य संयोजिका
डॉ. सविता साहु

प्रकाशक
विद्यालय और गणशिक्षा विभाग, ओड़िशा सरकार
परीक्षामूलक संस्करण : २०२६

प्रस्तुति
शिक्षक शिक्षा निदेशालय तथा राज्य शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद, ओड़िशा, भुवनेश्वर
ओड़िशा राज्य पाठ्य पुस्तक प्रणयन और प्रकाशन संस्था, भुवनेश्वर

मुद्रण : पाठ्य पुस्तक उत्पादन और विक्रय, भुवनेश्वर

आमुख

राष्ट्रीय शिक्षानीति -2020 एक परिवर्तनकारी पाठ्यचर्या और शैक्षणिक संरचना की अनुशंसा करती है, जिसके मूल में भारतीय संस्कृति, सभ्यता और भारतीय ज्ञान परंपरा सन्निहित हैं। यह नीति विद्यार्थियों को इक्कीसवीं सदी की संभावनाओं और चुनौतियों के साथ रचनात्मक रूप से जुड़ने के लिए तैयार करती है। बुनियादी और आरंभिक स्तर मानवीय अस्तित्व के पाँच आयामों को स्पर्श करते हुए विद्यार्थियों की अंतर्निहित योग्यताओं के संपोषण के साथ पंचकोश उनके अधिगम प्रतिफलों की मध्यावस्था में प्रगति का मार्ग प्रशस्त करते हैं। यह मध्य स्तर कक्षा - 6 से 8 तक तीन वर्षों को समाहित करते हुए आंरभिक और माध्यमिक स्तरों के बीच एक सेतु का कार्य करता है।

मध्य स्तर पर इस राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा का उद्देश्य है - विद्यार्थियों को उन आवश्यक कौशलों में दक्ष करना जो बच्चों की विश्लेषणात्मक, वर्णनात्मक और सृजनात्मक क्षमताओं को प्रोत्साहित करें तथा उन्हें आनेवाली चुनौतियों और अवसरों के लिए तैयार करें। राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा के आधार पर विकसित बहुआयामी पाठ्यक्रम में तीन भाषाओं सहित विज्ञान, गणित, सामाजिक, विज्ञान, कला शिक्षा, शारीरिक शिक्षा एवं कल्याण और व्यावसायिक शिक्षा सम्मिलित हैं।

ऐसी परिवर्तनकारी शिक्षण संस्कृति के लिए अनुकूल परिस्थितियों की आवश्यकता होती है और इसे व्यावहारिक रूप देने के लिए उपयुक्त पाठ्य-पुस्तक भी होनी चाहिए। इस दृष्टि से अहिंदी प्रदेश ओड़िशा की आठवीं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए तैयार की गई पाठ्यपुस्तक 'हिंदी कलिका' विद्यार्थियों की जिज्ञासा और अन्वेषणात्मक पवृत्ति के बीच एक विवेकपूर्ण संतुलन बनाती है। इस पुस्तक में साहित्य की प्रमुख विधाएँ सम्मिलित हैं, जिनके अंतर्गत चयनित रचनाएँ देशप्रेम, पर्यावरण, कला, इतिहास और भारतीय समाज के अनुभवों का भाषिक चित्र प्रस्तुत करती हैं। यह पाठ्यपुस्तक बच्चों में अवधारणात्मक समझ, तार्किक चिंतन, रचनात्मकता, आधारभूत मानवीय मूल्यों और प्रवृत्तियों के विकास पर समान बल देती है, जो राष्ट्रीय स्तर की शिक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसमें दी गई गतिविधियाँ और प्रश्न अभ्यास विद्यार्थी स्वयं तथा सहपाठियों के साथ समूह में सीखेंगे जिससे सीखने में रुचि बढ़ेगी और विद्यार्थियों का बहुआयामी विकास होगा।

इस स्तर पर विद्यार्थियों को अन्य विभिन्न संसाधनों का पता लगाने हेतु भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। ऐसे संसाधन उपलब्ध कराने में विद्यालय के पुस्तकालय महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके साथ ही विद्यार्थियों को ऐसा करने के लिए मार्गदर्शन और प्रोत्साहित करने में अभिभावकों और शिक्षकों की भूमिका भी महत्वपूर्ण होगी।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि सीखने के लिए प्रभावी वातावरण ही सुनिश्चित कर सकता है कि विद्यार्थी ध्यान, उत्साह और जुड़ाव के साथ सीखने के लिए प्रेरति हों और जिज्ञासा तथा सृजनशीलता के विकास हेतु प्रोत्साहित हों।

इस विश्वास के साथ मैं यह पुस्तक आठवीं कक्षा के सभी विद्यार्थियों के साथ शिक्षकों के लिए अनुशंसित करता हूँ। इस पाठ्यपुस्तक के विकास में सम्मिलित सभी लोगों का मैं आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने इस उत्कृष्ट प्रयास को साकार किया है। आशा करता हूँ कि यह पुस्तक सभी संबंधित लोगों की अपेक्षाओं को पूरा करेगी।

व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों को निरंतर परिष्कृत करने के प्रति समर्पित शिक्षक शिक्षा निदेशालय एवं राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद आपकी टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी, जिससे भावी संशोधनों में सहायता ली जा सकती है।

इस पुस्तक में स्थानित सारी रचनाओं के रचनाकारों के साथ-साथ आवश्यक चित्र बनानेवाले चित्रकारों को भी शिक्षक शिक्षा निदेशालय एवं राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, ओड़िशा तथा ओड़िशा विद्यालय शिक्षा कार्यक्रम प्राधिकरण की ओर से धन्यवाद दिया जाता है।

मैं मुख्य सलाहकार, मार्गदर्शक, संपादक तथा पुनरीक्षण मंडल के सदस्यों प्रो.डॉ. सत्यनारायण पंडा, डॉ.अजित प्रसाद महापात्र, प्रो.डॉ. लक्ष्मीधर दाश, श्री विनय कुमार पाठक, श्री आशीष कुमार राय, संयोजिका तथा पाठ्यचर्या विभाग की प्रभारी डॉ. सविता साहु तथा संयोजक श्री मानस कुमार नायक को धन्यवाद देता हूँ।

प्रस्तुत पुस्तक की सफल तैयारी तथा विकास में पूर्ण सहयोग एवं मार्गदर्शन के लिए मैं मान्यवर केंद्रमंत्री श्रीयुत धर्मेंद्र प्रधान, मान्यवर शिक्षामंत्री श्रीयुत नित्यानंद गंड, गणशिक्षा विभाग, ओड़िशा सरकार, सचिव व कमिश्नर श्रीमती शालिनी पंडित, शिक्षा विशेषज्ञ समिति के माननीय सदस्यों तथा जिन-जिन स्त्रोतों से सामग्री ली गई हैं, उनके प्रति मैं अपने अंत:करण से आभार प्रकट करता हूँ।

श्री मनोज कुमार पाढ़ी
निदेशक, ओ.प्र.से
शिक्षक शिक्षा निदेशालय तथा राज्य शैक्षिक अनुसंधान
और प्रशिक्षण परिषद, ओड़िशा, भुवनेश्वर-1

पाठ्यपुस्तक के संबंध में

प्रिय शिक्षक साथियो,

यह हर्ष का विषय है कि आठवीं कक्षा की हिंदी पाठ्यपुस्तक 'हिंदी कलिका-3' आपके हाथ में है। इसका निर्माण करते हुए मुख्य रूप से राष्ट्रीय शिक्षानीति 2020 के दिशा-निर्देशों को ध्यान में रखा गया है। भाषा सीखना शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2023 (विद्यालयी शिक्षा) का एक महत्वपूर्ण पहलू है। भाषा के सहारे हमारे विद्यार्थी अपने परिवार, परिवेश, संस्कृति और राष्ट्र से जुड़ते हैं। विद्यार्थियों में बुनियादी एवं संवैधानिक मूल्यों की स्थापना, स्वास्थ्य और सुरक्षा के प्रति सतर्कता, सामाजिक भावनात्मक अधिगम आदि को प्राप्त करने का माध्यम भाषा ही है। अत: यहाँ भाषा सीखने का तात्पर्य केवल पढ़ना और लिखना ही नहीं, बल्कि विद्यार्थियों की जीवन-शैली सहित उनमें व्यवहारगत बदलाव का परिलक्षित होना भी है।

भाषा हमारी सांस्कृतिक पहचान का एक महत्वपूर्ण घटक है। किसी समाज और व्यक्ति के आचार-व्यवहार, खान-पान, सोच-समझ, लोक-संस्कृति आदि को जानना और समझना हो तो भाषा ही सहायक सिद्ध होती है। हमारी परंपरा और संस्कृति भी भाषा के माध्यम से ही संरक्षित होती आ रही है। भाषा की इस प्रकृति एवं प्रकार्य का सीधा संबंध विद्यालयी शिक्षा से जुड़ता है। आवश्यकता इस बात की है कि विद्यार्थियों को अन्वेषण, सार्वजनिक चिंतन और तार्किक चेतना के माध्यम से स्वयं ज्ञान सृजन के लिए प्रोत्साहित किया जाए। विद्यार्थी भाषा को केवल नियमबद्ध व्यवस्था के रूप में न देखें, अपितु इसके सौंदर्य शास्त्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक और साहित्यिक पक्ष को भी समझें। इन बिंदुओ के आलोक में पाठ्यपुस्तक का निर्माण करते हुए मुख्य रूप से निम्नलिखित विचारों को ध्यान में रखा गया है :

1. पुस्तक में कविता, कहानी, निबंध, संवाद, मुकरियाँ आदि से विद्यार्थियों को रुचिपूर्ण अध्ययन से परिचित करवाया गया है। अभ्यासों को कुछ इस प्रकार विकसित किया गया है, जिससे विद्यार्थियों में भाषा के संप्रेषण के साथ-साथ सोचने, समझने, प्रश्न पूछने संबंधी रुचि का विकास होगा।

2. पाठों को सरल से जटिल एवं संश्लिष्ट की ओर बढ़ाते हुए क्रम में व्यवस्थित किया गया है। साथ ही उनमें पर्वों-त्योहारों आदि को भी संयोजित किया गया है।

3. पुस्तक में पाठों के माध्यम से सरल भाषा में भारतीय पौराणिक कथा-परंपरा से लेकर आधुनिक और तकनीकी रूप से विकसित हो रहे भारत की छवि को प्रस्तुत किया गया है।

4. यह पुस्तक बहुभाषी और बहु सांस्कृतिक परिवेश के इर्द-गिर्द अपना ताना-बाना रचती है। हिंदी भाषा सीखने-सिखाने के माध्यम से विद्यार्थियों में समावेशी दृष्टिकोण लाने और भारतीय संस्कृति की विविधता के प्रति सकारात्मक सोच विकसित करने के उद्देश्य को पुस्तक द्वारा पाने का प्रयास किया गया है।

5. भाषाई विभिन्न कौशलों, जैसे-समझ के साथ बोलने, सुनने, पढ़ने, लिखने और रचने आदि की प्रक्रिया की गतिशीलता को बनाए रखने के लिए विद्यार्थियों के जीवन और उनके आस-पास के परिवेश से जुड़ी बातों को आधार बनाया गया है।

6. पढ़ने-पढ़ाने की प्रक्रिया में विद्यार्थी पर्याप्त कल्पनाशील होते हैं। इसलिए पाठों के माध्यम से उन्हें कल्पना-जगत में प्रवेश करने को प्रोत्साहित किया गया है। जिज्ञासा और खोजबीन करना विद्यार्थियों की मूल प्रवृत्तियों में से एक है। इस प्रवृत्ति को शांत करने के लिए पाठों में अनेक गतिविधियाँ भी दी गई हैं।

पाठ्यपुस्तक में पाठ्य सामग्री का संयोजन :

पाठ-1 (पद्य) 'कबीर के दोहे' में जीवनोपयोगी उपदेशात्मक दोहे दिए गए हैं।

पाठ-2 (गद्य) 'एक टोकरी भर मिट्टी' में सामाजिक शोषण से मुक्ति और जागृति की बातें है।

पाठ-3 (पद्य) 'बना दो मधुर मेरा जीवन' में कर्तव्यबोध के साथ जीवन के लिए उत्साह और प्रेरणा की बातें हैं।

पाठ-4 (गद्य) 'तरुण के स्वप्न' में राष्ट्र-प्रेम और देश के लिए समर्पण का भाव है।

पाठ-5 (पद्य) 'बेटी' में परिवार में बेटी के महत्व और बेटी के प्रति बदलते दृष्टिकोण की बातें है।

पाठ-6 (गद्य) 'भक्त कवि बलराम दास' में आध्यात्मिक चेतना के विकास के साथ सामाजिक संस्कार की बातें हैं।

पाठ-7 (पद्य) 'स्वदेश' में स्वदेश प्रेम की बातें हैं।

पाठ-8 (गद्य) 'मेरा बचपन' में महान कथाकार प्रेमचंद के बचपन की स्मृतियाँ हैं।

पाठ-9 (पद्य) 'मेरी कुटिया देखो' में सामाजिक एवं आर्थिक भेद-भाव को दूर करने की ओर संकेत हैं।

पाठ-10 (गद्य) ‘कोणार्क’ में ओड़िशा के स्थापत्य-भास्कर्य और सांस्कृतिक धरोहर का उल्लेख है।

पाठ-11 (पद्य) ‘आशीर्वाद’ में जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहन की बातें हैं।

पाठ-12 (पद्य) ‘पारंपरिक नृत्य : छऊ’ में हमारी संस्कृति में नृत्य संस्कृति के दर्शन होते हैं।

पाठ-13 (गद्य) ‘स्वामीभक्त सुमुख’ में चित्रों के माध्यम से आनंदमयी कहानी द्वारा प्रभुभक्ति को दर्शाया गया है।

पाठ-14 (पद्य) ‘पहली बूँद’ में ग्रीष्मऋतु की प्रचंड प्रखरता के बाद वर्षा के प्रथम आगमन पर प्राकृतिक-दृश्य में बदलाव की छवि है।

पाठ-15 (गद्य) ‘सपनों की उड़ान’ में राष्ट्र-निर्माण और व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास की बातें हैं।

पाठ-16 (पद्य) ‘कदम मिलाकर चलना होगा’ में एकता के लिए उद्‌बोधन है।

पाठ-17 (पद्य) ‘मुकरियाँ’ में मुकरियाँ लेखन की आनंदमयी विधा से परिचय कराया गया है।

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक[1] **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और[2] **राष्ट्र की एकता**

और अखंडता सुनिश्चित करने वाली बंधुता

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान** सभा में आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) **को एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवाँ संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) राष्ट्र की एकता के स्थान पर प्रतिस्थापित।

पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तक की समीक्षा के लिए कोर समिति

1.	कमिश्नर तथा शासन सचिव, विद्यालय और गणशिक्षा विभाग	अध्यक्ष
2.	राज्य प्रकल्प निदेशक, ओड़िशा विद्यालय शिक्षा कार्यक्रम प्राधिकरण	सदस्य
3.	निदेशक, उच्च माध्यमिक शिक्षा	सदस्य
4.	निदेशक, माध्यमिक शिक्षा	सदस्य
5.	निदेशक, प्राथमिक शिक्षा	सदस्य
6.	अध्यक्ष, माध्यमिक शिक्षा परिषद	सदस्य
7.	अध्यक्ष, उच्च माध्यमिक शिक्षा परिषद	सदस्य
8.	निदेशक, पाठ्यपुस्तक निर्माण और विक्रय केंद्र	सदस्य
9.	निदेशक, वैषयिक शिक्षा और प्रशिक्षण निदेशालय	सदस्य
10.	निदेशक, ओड़िआ भाषा प्रतिष्ठान	सदस्य
11.	निदेशक, समाज कल्याण, महिला और शिशु विकास विभाग	सदस्य
12.	प्रतिनिधि, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद	सदस्य
13.	अध्यक्ष, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर	सदस्य
14.	प्रो. नित्यानंद प्रधान, अवकाशप्राप्त अध्यक्ष क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल और अध्यक्ष एस.सी.एफ., ओड़िशा	सदस्य
15.	डॉ. गोपाल प्रसाद महापात्र, अवकाशप्राप्त सहयोगी प्रोफेसर (संस्कृत विभाग)	सदस्य
16.	डॉ. किशोरचंद्र महांति, अवकाशप्राप्त शिक्षावित् (विज्ञान)	सदस्य
17.	डॉ. विनय पट्टनायक, मुख्य परामर्शदाता, एन.एस.टी.सी. कार्यक्रम	सदस्य
18.	डॉ. सुशांत दास, पूर्व सभापति, उच्च माध्यमिक शिक्षा परिषद, ओड़िशा	सदस्य
19.	डॉ. ललित विहारी लेंका, अवकाशप्राप्त सहयोगी प्रोफेसर, ओड़िआ विभाग, एकाम्र कॉलेज, भुवनेश्वर	सदस्य
20.	डॉ. सरोज लक्ष्मी सिंह, अध्यक्ष, रमादेवी उच्च माध्यमिक विद्यालय, भुवनेश्वर	सदस्य

21. डॉ. खगेश्वर दास, अंग्रेजी विशेषज्ञ
अध्यक्ष पद्मपुर कॉलेज, बरगड़ सदस्य

22. डॉ. बलराम साहु, प्रोफेसर माइक्रोबाइयोलोजी
सोआ विश्व विद्यालय, ओड़िशा कृषि वैषयिक विश्व विद्यालय, भुवनेश्वर सदस्य

23. डॉ. गौरांग महांति, भौतिक विज्ञान विशेषज्ञ, अवकाशप्राप्त अध्यक्ष
खल्लिकोट स्वयंशासित महाविद्यालय, ब्रह्मपुर, गंजाम सदस्य

24. निदेशक, शिक्षक शिक्षा निदेशालय तथा राज्य शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद, ओड़िशा सदस्य

वंदे उत्कळ जननी

वंदे उत्कळ जननी
चारु हासमयी चारुभाषमयी जननी, जननी, जननी।
पूत-पयोधि-बिधौत-शरीरा,
ताळतमाळ-सुशोभित तीरा,
शुभ्र तटिनीकूळ-शीकर-समीरा
जननी, जननी, जननी।।
घनवनभूमि राजित अंगे,
नीळ भूधरमाळा साजे तरंगे,
कळ-कळ मुखरित चारु बिहंगे
जननी, जननी, जननी।।
सुन्दरशाळि-सुशोभित-क्षेत्रा,
ज्ञानविज्ञान-प्रदर्शित-नेत्रा,
योगीऋषिगण-उटज पवित्रा,
जननी, जननी, जननी।।
सुंदर मंदिर मंडित-देशा,
चारु कळावळि-शोभित-वेशा,
पुण्य तीर्थचय-पूर्ण-प्रदेशा
जननी, जननी, जननी।।

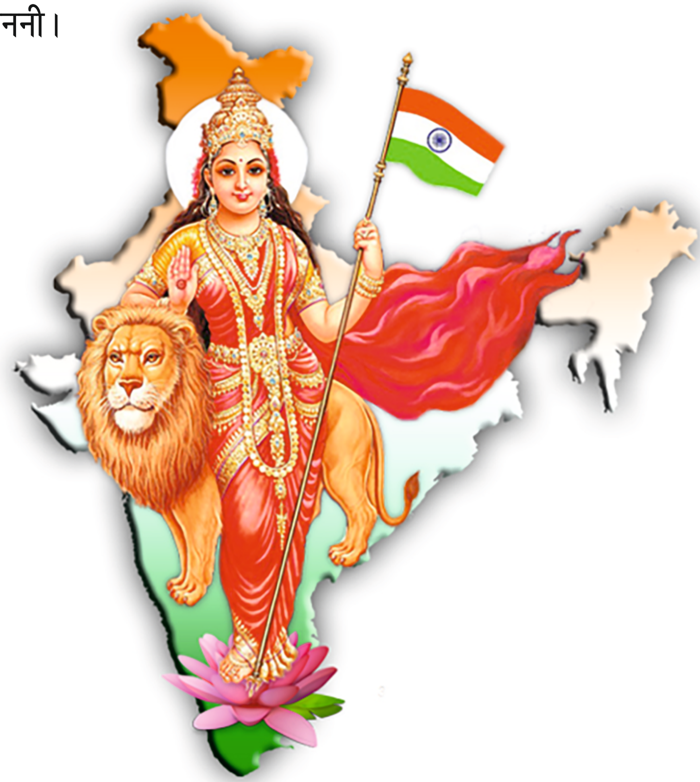

उत्कळ सुरवर-दर्पित-गेहा,
अरिकुळ-शोणित-चर्चित-देहा,
विश्वभूमंडळ-कृतवर-स्नेहा,
जननी, जननी, जननी।
कविकुळमौळिसुनन्दन-वंद्या,
भुवन विघोषित-कीर्तिअनिंद्या,
धन्ये, पुण्ये, चिर शरण्ये,
जननी, जननी, जननी।

– कांत कवि लक्ष्मीकांत महापात्र

विषय-सूची

इकाई - 1

1. कबीर के दोहे (पद्य)
2. एक टोकरी भर मिट्टी (गद्य)
3. बना दो मधुर मेरा जीवन (पद्य)
4. तरुण के स्वप्न (गद्य)

इकाई - 2

5. बेटी (पद्य)
6. भक्त कवि बलराम दास (गद्य)
7. स्वदेश (पद्य)
8. मेरा बचपन (गद्य)

इकाई - 3

9. मेरी कुटिया देखो (पद्य)
10. कोणार्क (गद्य)
11. एक आशीर्वाद (पद्य)
12. पारंपरिक नृत्य : छऊ (गद्य)
13. स्वामीभक्त सुमुख (कहानी)

इकाई - 4

14. पहली बूँद (पद्य)
15. सपनों की उड़ान (गद्य)
16. कदम मिलाकर चलना होगा (पद्य)
17. मुकरियाँ (पद्य)

पाठ - 1

कबीर दास के दोहे

गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागौं पाँय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय।।

साधू ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।
सार सार को गहि रहै, थोथा देइ उड़ाय।।

ऐसी बानी बोलिए मन की आपा खोय।
औरन को सीतल करै, आपहुँ सीतल होय।।

बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।
पंथी को छाया नहीं, फल लागै अति दूर।।

निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।
बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय।।

– संत कबीर दास

कवि परिचय :

कबीर दास – संत कबीर दास जी का जन्म सन् 1398 ई. में हुआ था। वे एक ऐसे संत थे, जो करघे पर कपड़ा और मन में कविता बुनते-बुनते इतने प्रसिद्ध हो गए कि उनकी रचनाएँ आज भी लोग सुनते हैं और पढ़ते हैं। उनकी रचनाएँ मुख्यत: 'कबीर ग्रंथावली' में संगृहीत हैं। कबीर के दोहे बहुत ही प्रसिद्ध हैं, जो कि लोगों के दैनंदिन जीवन में काम आते हैं। इन दोहों को 'साखी' भी कहा जाता है, ये दोहे उनके ज्ञान और अनुभव के साक्षी हैं। कबीर की रचनाएँ हमें जीवन की सच्चाई को समझने और अच्छा मनुष्य बनने की प्रेरणा देती हैं।

शब्दार्थ :

गोविंद - भगवान

काके - किसके

बलिहारी - न्योछावर

सुभाय - स्वभाव

थोथा - सारहीन

औरन - दूसरे, अन्य लोग

पंथी - पथिक

नियरे - निकट, पास

दोऊ - दोनों

पाँय - पाँव, पैर

सूप - अनाज फटकने का साधन

गहि रहै - ग्रहण कर लेता है

आपा - अहंकार, गर्व

सीतल - शीतल, ठंड

निंदक - निंदा करने वाला, दूसरों का दोष ढूँढ़ने वाला

बातचीत के लिए :

1. गुरु भगवान से बड़े हैं। यह विषय कबीर के कौन से दोहे में वर्णित है ? इसके बारे में आप कक्षा में चर्चा कीजिए।
2. साधु के स्वभाव के बारे में आप क्या जानते हैं ? इस पर कक्षा में चर्चा कीजिए।
3. मीठी वाणी या मीठे वचन बोलने से हमें क्या लाभ मिलता है ? इसके बारे में कक्षा में बताइए।
4. हम बड़े लोग किन्हें कहेंगे ? बड़े लोगों का लक्षण क्या है ? इस पर चर्चा कीजिए।
5. निंदा करनेवाले लोग परोक्ष में हमारा क्या उपकार करते हैं, सहपाठियों के साथ चर्चा कीजिए।

सोचिए और लिखिए :

1. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्पों में से चुनकर लिखिए।

(क) 'गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागौं पाँय' – इस दोहे में किसके बारे में कहा गया है ?

(i) श्रम के महत्व

(ii) ज्ञान के महत्व

(iii) गुरु के महत्व

(iv) भक्ति के महत्व

(ख) 'साधु ऐसा चाहिए जैसा सूप सुभाय। सार सार को गहि रहै थोथा देइ उड़ाय'। इस दोहे में साधु के स्वभाव के बारे में क्या कहा गया है ?

(i) साधु का स्वभाव सूप जैसा है।

(ii) साधु का स्वभाव नम्र होता है।

(iii) साधु स्वभाव से धीर होते हैं।

(iv) साधु स्वभाव से अहंकारी होते हैं।

(ग) 'ऐसी बानी बोलिए मन का आपा खोय। औरन को सीतल करै आपहुँ सीतल होय।' इस दोहे के अनुसार मधुर वचन बोलने से क्या लाभ मिलता है ?

(I) लोग हमारी प्रशंसा करने लगते हैं।

(ii) किसी के साथ विवाद होने पर उसमें जीत मिलती है।

(iii) सुनने वालों का मन इधर-उधर भटकने लगता है।

(iv) स्वयं को और दूसरों को मानसिक शांति मिलती है।

(घ) निम्नलिखित में से किस पेड़ के नीचे पथिक को छाया नहीं मिलती ?

(I) आम के

(ii) मौलश्री के

(iii) बरगद के

(iv) खजूर के

(ङ) 'निंदक नियरे राखिए आँगन कुटी छवाय' इस पंक्ति के अनुसार हमें किस दृष्टिकोण को अपनाना चाहिए ?

(i) निंदा करने वालों से बचना चाहिए।

(ii) निंदकों को दूर रखना चाहिए।

(iii) निंदा करने वालों को पास रखना चाहिए।

(iv) निंदको की निंदा करनी चाहिए।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए :

(क) गुरु और गोविंद दोनों हमारे सामने खड़े हैं तो हमें किनके चरण पहले छूने चाहिए ?

(ख) साधु का स्वभाव कैसा होना चाहिए ?

(ग) मनुष्यों को कैसी वाणी बोलनी चाहिए ?

(घ) दोहे में खजूर के पेड़ के बारे में क्या कहा गया है ?

(ङ) कौन पानी और साबुन के बिना हमारे मन को निर्मल कर देता है ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए :

(क) साधु के स्वभाव की तुलना किसके साथ की गई है और क्यों ?

(ख) मधुर वाणी बोलने से क्या फायदा मिलता है ?

(ग) निंदक की बात क्यों सुननी चाहिए ?

(घ) कवि के अनुसार गुरु गोविंद से भी श्रेष्ठ कैसे होते हैं ?

4. 'क' स्तंभ के साथ 'ख' स्तंभ का मिलान कीजिए :

'क'	'ख“
गुरु गोविंद दोऊ खड़े	थोथा देइ उड़ाय
बलिहारी गुरु आपने	फल लागै अति दूर
सार सार को गहि रहै	काके लागूँ पाँय
औरन को सीतल करै	आँगन कुटी छवाय
पंथी को छाया नहीं	गोविंद दियो बताय
निंदक नियरे राखिए	आपहुँ सीतल होय

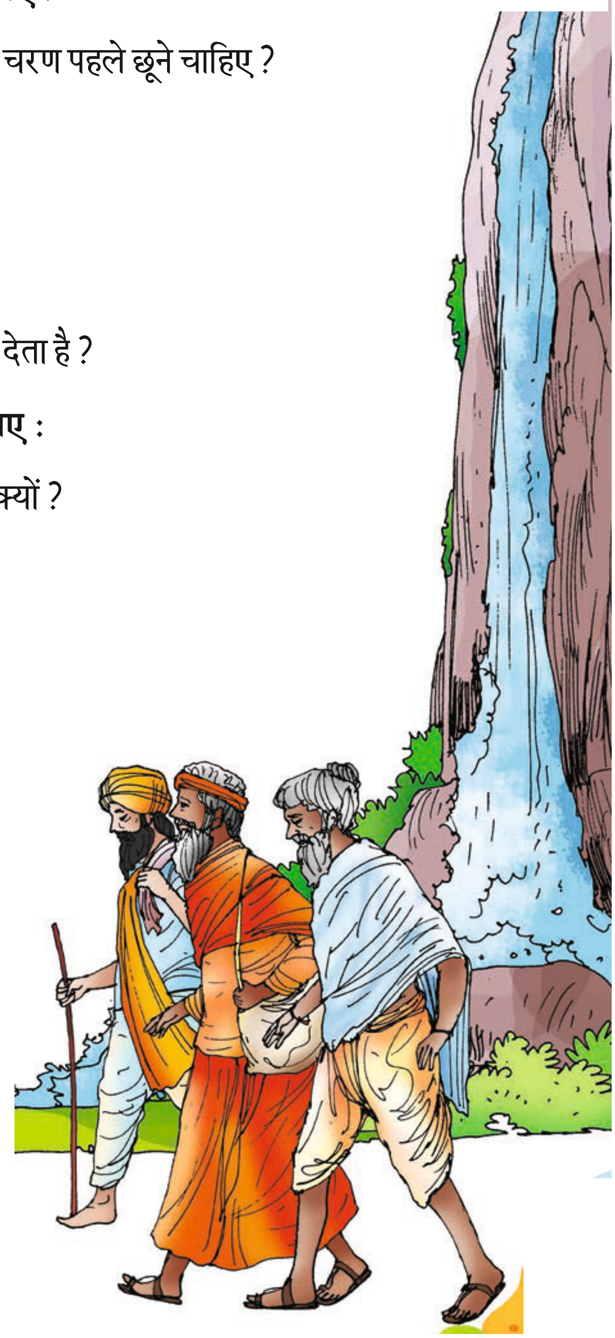

अनुमान और कल्पना :

1. आप के जीवन में गुरु का महत्व क्या है ? बताइए।
2. अनुमान लगाइए कि यदि संसार में कोई गुरु या शिक्षक नहीं होता तो क्या होता ?
3. सूप का काम क्या होता है ? हम सूप के स्वभाव से क्या सीख सकते हैं ?
4. कल्पना कीजिए कि यदि सभी मनुष्य अपनी वाणी को मधुर बना लेंगे तो समाज में क्या परिवर्तन आ जाएगा ?
5. खजूर, ताड़ और नारियल जैसे पेड़ों के नीचे छाया नहीं होती पर ये पेड़ बहुत ही उपयोगी होते हैं। इन पेड़ों की उपयोगिता बताइए।
6. यदि समाज में कोई किसी की आलोचना न करें तो क्या होगा ? लाभ या हानि ? अपने विचार कक्षा में साझा कीजिए।

भाषा-ज्ञान :

1. निम्नलिखित शब्दों का खड़ीबोली हिंदी रूप लिखिए :

   दोऊ –

   काके –

   सुभाय –

   सीतल –

   बानी –

2. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए :

   गुरु –

   गोविंद –

   साधु –

   पेड़ –

   पंथी –

   कुटी –

   पानी –

3. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :

साधु –

सार –

बड़ा –

गुरु –

निर्मल –

4. कबीर दास जी के दोहों से तुकांत शब्द छाँटिए :

जैसे : पाँय – बताय

ऐसे ही अन्य तुकांत शब्द छाँटकर लिखिए।

पाठ से आगे

1. कबीर दास हिंदी साहित्य के बहुत बड़े कवि हैं। वे भक्ति युग के कवि थे। वैसे ही भक्तियुग में बहुत सारे कवि हुए हैं। जैसे - सूरदास, तुलसी दास, रहीम, मीराबाई, रैदास, नंददास, रसखान आदि। इनमें से कुछ कवियों के द्वारा रचित दोहों और पदों का संग्रह कर कॉपी में लिखिए और उनके अर्थ जानने की कोशिश कीजिए।

2. आपकी पुस्तक में कबीर दास जी के पाँच दोहे दिए गए हैं। इनके अलावा कबीर दास जी के द्वारा रचित और कुछ दोहे संग्रह कीजिए तथा उनके अर्थ समझिए।

3. कबीर दास जी के विभिन्न दोहों को याद करके कक्षा में सुनाइए।

‘‘दोहा’“ एक मात्रिक छंद है। इसमें तेरह और ग्यारह क्रम से चौबीस मात्राएँ होती हैं। पाठ में आए दोहों की मात्राओं का हिसाब करें। इसमें शिक्षक की सहायता ली जा सकती है।

पाठ - 2

एक टोकरी भर मिट्टी

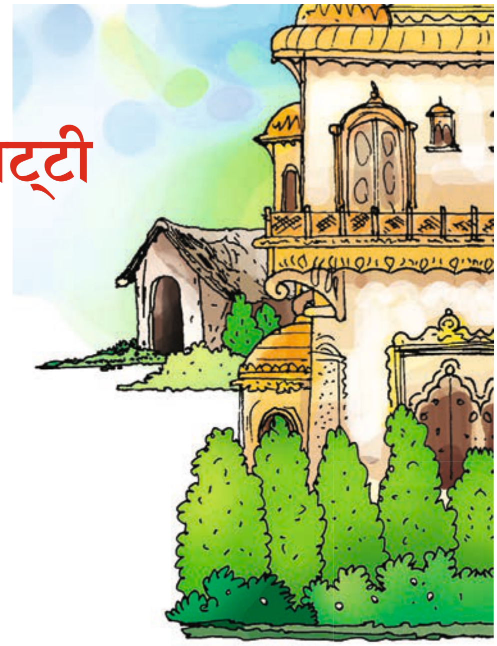

किसी श्रीमान् जमींदार के महल के पास एक गरीब, अनाथ वृद्धा की झोंपड़ी थी। जमींदार साहब को अपने महल का अहाता उस झोंपड़ी तक बढ़ाने की इच्छा हुई। वृद्धा से बहुतेरा कहा कि अपनी झोंपड़ी हटा ले, पर वह तो कई जमाने से वहीं बसी थी। उसका प्रिय पति और इकलौता पुत्र भी उसी झोंपड़ी में मर गया था। पतोहू भी एक पाँच बरस की कन्या को छोड़कर चल बसी थी। अब यही उसकी पोती इस वृद्धावस्था में एकमात्र आधार थी। जब उसे अपनी पूर्वस्थिति की याद आ जाती तो मारे दुख के फूट-फूट कर रोने लगती थी और जब से उसने अपने श्रीमान् पड़ोसी की इच्छा का हाल सुना, तब से वह मृतप्राय हो गई थी। उस झोंपड़ी में उसका ऐसा कुछ मन लग गया था कि बिना मरे वहाँ से वह निकलना ही नहीं चाहती थी। श्रीमान् के सब प्रयत्न निष्फल हुए, तब वे अपनी जमींदारी चाल चलने लगे। बाल की खाल निकालने वाले वकीलों की थैली गरम कर उन्होंने अदालत से उस झोंपड़ी पर अपना कब्जा कर लिया और वृद्धा को वहाँ से निकाल दिया। बिचारी अनाथ तो थी ही, पास-पड़ोस में कहीं जाकर रहने लगी।

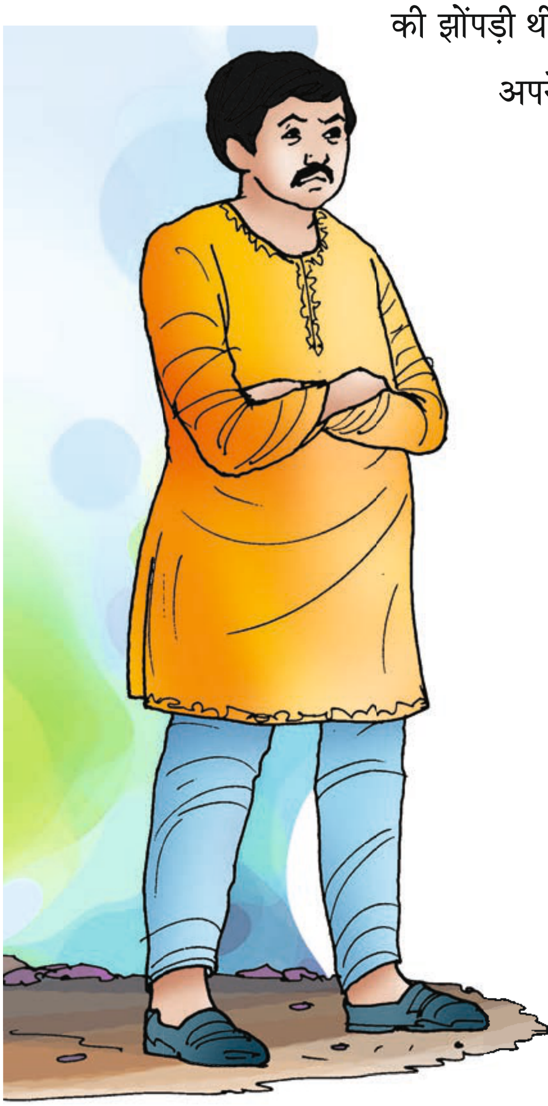

एक दिन श्रीमान् उस झोंपड़ी के आस-पास टहल रहे थे और लोंगों को काम बतला रहे थे कि इतने में वह वृद्धा हाथ में एक टोकरी लेकर वहाँ पहुँची। श्रीमान् ने उसको देखते ही अपने नौकरों से कहा कि उसे यहाँ से हटा दो। पर वह गिड़गिड़ाकर बोली, "महाराज, अब तो झोंपड़ी तुम्हारी ही हो गई है। मैं उसे लेने नहीं आई हूँ। महाराज क्षमा करें तो

एक विनती है।'' जमींदार साहब के सिर हिलाने पर उसने कहा, ''जब से यह झोंपड़ी छूटी है, तब से मेरी पोती ने खाना-पीना छोड़ दिया है। मैंने बहुत कुछ समझाया, पर वह एक नहीं मानती। यही कहा करती है कि अपने घर चल, वहीं रोटी खाऊँगी। अब मैंने यह सोचा कि इस झोंपड़ी में से एक टोकरी भर मिट्टी लेकर उसी का चूल्हा बनाकर रोटी पकाऊँगी। इससे भरोसा है कि वह रोटी खाने लगेगी। महाराज कृपा करके आज्ञा दीजिए तो इस टोकरी में मिट्टी ले जाऊँ!'' श्रीमान् ने आज्ञा दे दी।

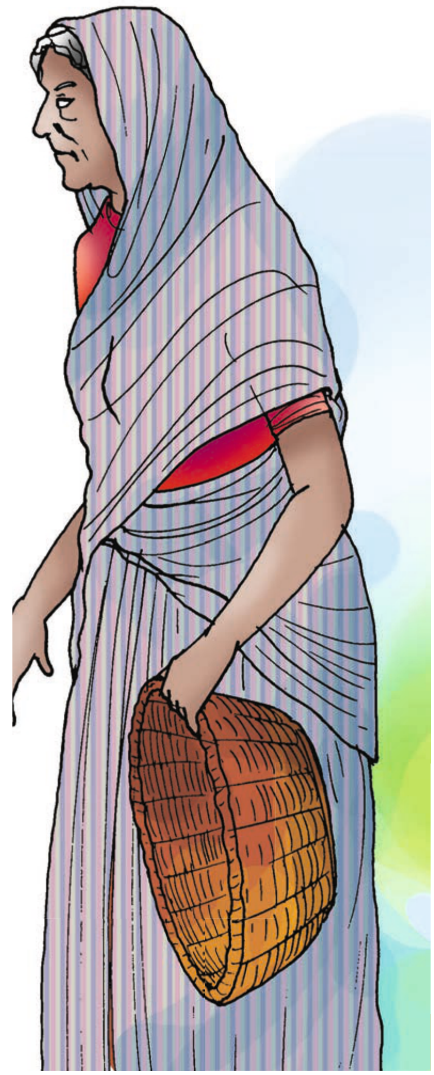

वृद्धा झोंपड़ी के भीतर गई। वहाँ जाते ही उसे पुरानी बातों का स्मरण हुआ और उसकी आँखों से आँसू की धारा बहने लगी। अपने आंतरिक दु:ख को किसी तरह सँभालकर उसने अपनी टोकरी मिट्टी से भर ली और हाथ से उठाकर बाहर ले आई। फिर हाथ जोड़कर श्रीमान से प्रार्थना करने लगी कि ''महाराज, कृपा करके इस टोकरी को जरा हाथ लगाइए जिससे कि मैं उसे अपने सिर पर धर लूँ।'' जमींदार साहब पहले तो बहुत नाराज हुए, पर जब वह बार-बार हाथ जोड़ने लगी और पैरों पर गिरने लगी तो उनके भी मन में कुछ दया आ गई। किसी नौकर से न कहकर आप ही स्वयं टोकरी उठाने को आगे बढ़े। ज्यों ही टोकरी को हाथ लगाकर ऊपर उठाने लगे त्यों ही देखा कि यह काम उनकी शक्ति के बाहर है। फिर तो उन्होंने अपनी सब ताकत लगाकर टोकरी को उठाना चाहा पर जिस स्थान पर टोकरी रखी थी, वहाँ से वह एक हाथ भी ऊँची न हुई। वह लज्जित होकरकहने लगे कि, ''नहीं, यह टोकरी हमसे न उठाई जाएगी।''

यह सुनकर वृद्धा ने कहा, 'महाराज, नाराज न हों... आपसे तो एक टोकरी भर मिट्टी उठाई नहीं जाती और इस झोंपड़ी में तो हजारों टोकरियाँ मिट्टी पड़ी है। उसका भार आप जन्म-भर कैसे उठा सकेंगे? आप ही इस बात पर विचार कीजिए।

जमींदार साहब धन-मद से गर्वित हो अपना कर्तव्य भूल गए थे, पर वृद्धा के उपर्युक्त वचन सुनते ही उनकी आँखें खुल गईं। कृतकर्म का पश्चाताप कर उन्होंने वृद्धा से क्षमा माँगी और उसकी झोंपड़ी वापस दे दी।

—माधवराव सप्रे

लेखक परिचय :

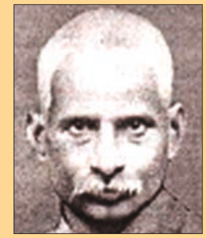
(1871 1926)

हिंदी की प्रारंभिक कहानियों में 'एक टोकरी भर मिट्टी' का भी उल्लेख आता है। इसके लेखक माधवराव सप्रे हैं। ऐसा माना जाता है कि ये लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की प्रेरणा से हिंदी में आए थे। इनकी मातृभाषा मराठी थी। इनका जन्म दमोह (मध्य प्रदेश) में हुआ था। इन्होंने लोकमान्य तिलक के चर्चित ग्रंथ 'गीता-रहस्य' का मराठी से हिंदी में अनुवाद किया था। 'स्वदेशी आंदोलन' और 'बायकॉट' इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं।

'एक टोकरी भर मिट्टी' जैसी कहानियाँ केवल घटनाएँ नहीं सुनातीं; बल्कि मिट्टी से उठते हुए उन प्रश्नों को उठाती हैं जो हमारे सामाजिक ताने-बाने में गाँठ बनकर अटके हैं।

शब्दार्थ :

जमींदार - जमीन का मालिक

बहुतेरा - बहुत-सा, अनेक

मृतप्राय - मरने के करीब

बाल की खाल निकालना - व्यर्थ का तर्क करना

अदालत - न्यायालय

सँभाल - रख-रखाव

गर्वित - अभिमानी

कृतकर्म - किया हुआ काम

अहाता - चहारदीवारी से घिरी हुई जगह

पतोहू - पुत्रवधू, बेटे की पत्नी

निष्फल - जिसका कुछ फल न हो

थैली गरम करना - रिश्वत देना

बातचीत के लिए :

1. क्या जमींदार द्वारा वृद्धा की झोंपड़ी हड़पना उचित था ? मित्रों के साथ चर्चा कीजिए।
2. वृद्धा की पोती के झोंपड़ी छोड़ने के दु:ख पर कक्षा में चर्चा कीजिए।
3. यदि वृद्धा की पोती जमीदार से स्वयं बात करती तो क्या कहती ? इस पर चर्चा कीजिए।
4. कक्षा में अमीरों द्वारा गरीबों के शोषण पर लघु वक्तव्य प्रस्तुत कीजिए।

सोचिए और लिखिए :

1. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्पों में से चुनकर लिखिए :

(क) जमींदार को झोंपड़ी हटाने की आवश्यकता क्यों लगी ?

(I) झोंपड़ी जर्जर हो चुकी थी।

(ii) झोंपड़ी रास्ते में बाधा थी।

(iii) वह अहाते का विस्तार करना चाहता था।

(iv) वृद्धा से उसका कोई पुराना झगड़ा था।

(ख) वृद्धा ने मिट्टी ले जाने की अनुमति कैसे माँगी ?

(I) क्रोध और झगड़ा करके

(ii) अदालत से अनुमति लेकर

(iii) भक्ति और श्रद्धा से

(iv) गिड़गिड़ा कर

(ग) वृद्धा की पोती का व्यवहार किस भाव को दर्शाता है ?

(I) दया

(ii) लगाव

(iii) गुस्सा

(iv) डर

(घ) कहानी का अंत कैसा है ?

(I) दु:खद

(ii) सुखद

(iii) प्रेरणादायक

(iv) नकारात्मक

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक - एक वाक्य में लिखिए :

(क) अनाथ वृद्धा की झोंपड़ी कहाँ थी ?

(ख) वृद्धावस्था में अनाथ वृद्धा का एकमात्र आधार कौन थी ?

(ग) अनाथ वृद्धा झोंपड़ी छोड़ने के बाद कहाँ रह रही थी ?

(घ) अनाथ वृद्धा टोकरी लेकर क्या लेने आई थी ?

(ङ) अनाथ वृद्धा की पोती ने खाना-पीना क्यों छोड़ दिया था ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

(क) जमींदार वृद्धा को झोंपड़ी से क्यों हटाना चाहता था ?

(ख) जमींदार ने वृद्धा को झोंपड़ी से हटाने के लिए क्या किया ?

(ग) अनाथ वृद्धा मृतप्राय क्यों हो गई थी ?

(घ) अनाथ वृद्धा झोंपड़ी से एक टोकरी मिट्टी क्यों ले जाना चाहती थी ?

(ङ) जमींदार साहब का हृदय-परिवर्तन कैसे हुआ ?

(च) जमींदार साहब को जब अपने कर्तव्य का बोध हुआ तब उसका परिणाम क्या हुआ ?

4. निम्नलिखित वाक्यों के रिक्त स्थानों पर दिए गए विकल्पों में से उचित शब्द छाँटकर वाक्य पूरा कीजिए।

(क) महल के पास एक गरीब, अनाथ वृद्धा की ....थी। (लकड़ी / झोंपड़ी)

(ख) श्रीमान् के सब .... निष्फल हुए। (विचार / प्रयत्न)

(ग) इससे भरोसा है कि वह .... खाने लगेगी। (रोटी / फल)

(घ) नहीं, यह टोकरी .... न उठाई जाएगी। (तुमसे / हमसे)

(ङ) इस झोंपड़ी में तो हजारों टोकरियाँ .... पड़ी है। (मिट्टी / घास)

अनुमान और कल्पना :

1. यदि वृद्धा की पोती जमींदार से स्वयं बात करती तो वह क्या कहती ? सोचकर लिखिए।
2. यदि आप जमींदार की जगह होते तो क्या करते ? सोच कर लिखिए।

भाषा-ज्ञान :

1. किसी भी व्यक्ति, वस्तु, स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं। जैसे - मदन, पुस्तक, कटक, दूरी आदि। आप पाठ से ऐसे ही संज्ञा शब्दों को ढूँढकर निम्न मंजूषा में लिखिए।

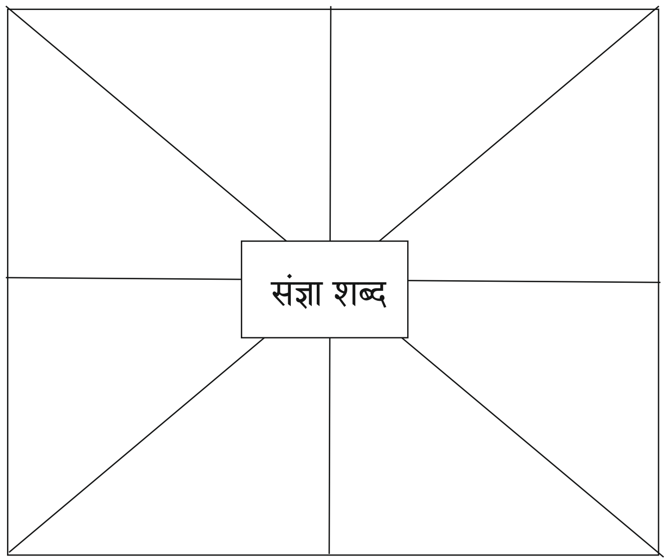

2. ज्ञातव्य है कि संज्ञा शब्द पाँच प्रकार के होते हैं। जैसे –

(१) व्यक्तिवाचक (२) जातिवाचक (३) भाववाचक (४) द्रव्यवाचक (५) समूहवाचक

आप उदाहरण के अनुसार पाठ से या अन्यत्र से कोई दो-दो उदाहरण लिखिए

(१) व्यक्तिवाचक (हिमालय) –..

(२) जातिवाचक (घर) – ....

(३) भाववाचक (बचपन) – ....

(४) द्रव्यवाचक (दही) – ....

(५) समूहवाचक (भीड़) – ....

3. निम्नलिखित प्रत्येक संज्ञा शब्द से अलग-अलग वाक्य बनाइए :

(क) क्षमा – ....।

(ख) दु:ख – ....।

(ग) प्रयत्न – ....।

(घ) सिर – ....।

(ङ) कृपा – ....।

पाठ से आगे

1. विचार कीजिए कि जमींदार यदि वृद्धा की मिट्टी भरी टोकरी उठा देता तो आगे कहानी का रूप क्या होता और कहानी का अंत कैसा होता ?

2. पाठ में जमींदार ने वृद्धा के साथ अन्याय किया है। विचार कीजिए कि क्या समाज में अमीरों का किसी गरीब और अनाथ को सताना उचित है ? आप बड़े होकर इस तरह की सामाजिक विकृति और शोषण को दूर करने के लिए क्या-क्या करना चाहेंगे ?

पाठ - 3

बना दो मधुर मेरा जीवन

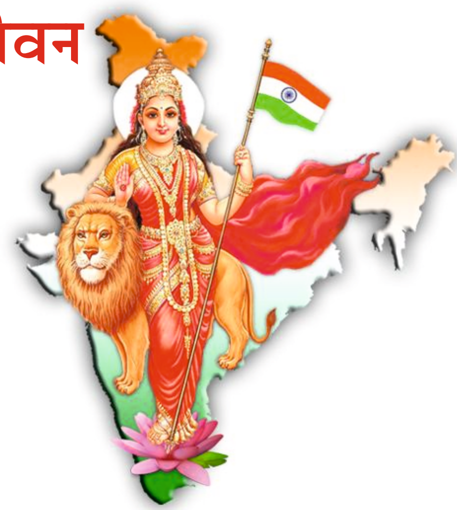

बना दो ऐसा मेरा जीवन,
कि मातृभूमि हेतु बेहिचक
कर दूँ तन-मन-धन अर्पण।
बन सुमन सुरभि मधुरस
शुचि सरल छलहीन सरस
बितरूँ जन-जन में अमृत कण!

बना दो ऐसा मेरा मन
जग के सुख-दु:ख का दर्पण
पोंछ जन-जन के नयनों के
अश्रु कण करूँ मरण वरण।
प्रभु, बनाओ ऐसा मेरा तन
कि अपनी फौलादी बाहों से
अप्रतिहत, अविचल गति से
कर सकूँ सदा अन्याय - दमन।

देना रसना में मधुर वचन,
हत्तंत्री की तान से मेरी
अकर्ण विषधर हो जाए नतफन।
बना दो मधुर यह जीवन,
प्रेम, परहित, सेवा से मेरी
धरती बन जाए स्वर्ग - भुवन।

– प्रो. डॉ. राधाकांत मिश्र

कवि परिचय :

प्रोफेसर डॉ० राधाकांत मिश्र का जन्म बलांगीर जिले के राजपाली गाँव में 1 जुलाई, 1940 को हुआ था। वे तीस वर्ष से अधिक समय तक अध्यापना करके हिंदी प्रोफेसर तथा प्राचार्य के रूप में सेवा-निवृत्त हुए थे। उन्होंने हिंदी में अनेक मौलिक पुस्तकों की रचना की है। वे ओड़िआ से हिंदी और हिंदी से ओड़िआ में बहुत-सी पुस्तकों का अनुवाद किया है। वे स्रोत भाषा की मौलिकता, भाव और शैली को अक्षुण्ण रखते हुए लक्ष्य भाषा में अनुवाद करने में सिद्धहस्त थे।

उनके 'रामचरितमानस', 'कामायनी' और 'नदी के द्वीप' का ओड़िआ में अनुवाद तथा 'छ माण आठगुंठ' का हिंदी में अनुवाद बहुत प्रासिद्ध हैं। उन्हें गंगांशरण सिंह हिंदी सेवी पुरस्कार, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान का सौहार्द पुरस्कार आदि विभिन्न पुरस्कारों से पुरस्कृत किया गया है। उनका निधन 20 मई, 2021 को हो गया था।

शब्दार्थ :

हेतु - के लिए

सुमन - फूल

मधुरस - शहद

अश्रु - आँसू

अप्रतिहत - अबाध

रसना - जीभ

हृत्तंत्री तान - संगीत के स्वर

विषधर - साँप, दुष्टजन

परहित - परोपकार

बेहिचक - बिना झिझक, निसंकोच

सुरभि - सुगंध

शुचि - पवित्र

फौलादी - फौलाद या इस्पात से बना

अविचल - अटल

हृत्तंत्री - हृदय के तार, स्नेहभरी बातें

अकर्ण - बिना कान वाले

नतफन - नीचे झुका हुआ फन

बातचीत के लिए :

1. हमारा जीवन कैसे मधुर बन सकता है ? इस पर छात्र-छात्राएँ कक्षा में चर्चा करेंगे।
2. आप अपनी मातृभूमि के लिए क्या कर सकते हैं ? बताइए।
3. कवि अपने मन को क्या बनाना चाहते हैं ? ऐसा क्यों करना चाहते हैं ? चर्चा कीजिए।
4. अमृत का वितरण करने का अर्थ क्या है ? इस पर कक्षा में चर्चा कीजिए।

सोचिए और लिखिए :

1. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्पों में से चुनकर लिखिए :

(क) कवि मातृभूमि हेतु क्या अर्पण करना चाहता है ?

(i) अपना जीवन

(ii) तन-मन-धन

(iii) सुमन

(iv) अमृत कण

(ख) अपने मन को किसका दर्पण बनाना चाहिए ?

(I) जग के सुख का

(ii) जग के दु:ख का

(iii) जग के सुख-दुख का

(iv) जन-जन का

(ग) कवि ने किसे अकर्ण कहा है ?

(I) पशु को

(ii) पक्षी को

(iii) बिना कान वाले मनुष्य को

(iv) सर्प को

(घ) प्रेम, परहित और सेवा से धरती क्या बन जाएगी ?

(I) स्वर्ग भुवन

(ii) हरी-भरी

(iii) सुख-दु:ख का दर्पण

(iv) छलहीन

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक - एक वाक्य में लिखिए :

(क) कवि किसके लिए तन-मन-धन अर्पण करना चाहता है ?

(ख) कवि जन-जन में क्या वितरण करना चाहता है ?

(ग) कवि मरण को वरण करने से पहले क्या करना चाहता है ?

(घ) अपनी फौलादी बाहों से कवि क्या करना चाहता है ?

(ङ) यह धरती कैसे स्वर्ग-भुवन बन जाएगी ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो - तीन वाक्यों में लिखिए :

(क) कवि क्या बनकर जन-जन में अमृत-कण वितरण करना चाहता है ?

(ख) कवि अन्याय हटाने के लिए क्या करना चाहता है ?

(ग) अकर्ण विषधर का अभिप्राय क्या है ? उसे कैसे नम्र बनाया जा सकेगा ?

अनुमान और कल्पना :

1. अगर आप अपनी मातृभूमि से बेहद प्यार करते हैं तो उसके लिए आपको क्या करना चाहिए ?
2. अपनी मातृभूमि के लिए तन-मन-धन अर्पण करने वाले किसी महान स्वतंत्रता सेनानी के बारे में बताइए।
3. आपके पास ताकत तो है, पर उसका उपयोग आप कैसे कर सकते हैं ? कक्षा में चर्चा कीजिए।
4. आप किसी दुखी या गरीब व्यक्ति को देखते हैं तो कैसे उनकी सहायता करते हैं ? सहपाठियों के साथ अपने विचार साझा कीजिए।

भाषा-ज्ञान :

1. समान अर्थ वाले शब्दों को पर्यायवाची शब्द भी कहते हैं।

   जैसे - सुमन के पर्यायवाची शब्द हैं - फूल, पुष्प, कुसुम

उसी तरह नीचे दिए गए शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए :

तन –	....	....
शुचि –	....	....
सुरभि –	....	....
दर्पण –	....	....
नयन –	....	....
रसना –	....	....
विषधर –	....	....
जीवन –	....	....

2. विपरीत अर्थवाले शब्दों को विलोम शब्द कहा जाता है।

जैसे – सरल – कठिन

इस उदाहरण के अनुसार निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :

मधुर –	जीवन –
सरस –	अन्याय –
अमृत –	प्रेम –
सुख –	स्वर्ग –

3. शब्द से पहले लगने वाले शब्दांश को उपसर्ग कहा जाता है।

जैसे – बे + हिचक = बेहिचक

अ + न्याय = अन्याय

अ + प्रतिहत = अप्रतिहत

आप भी ऐसे कुछ शब्द लिखिए। शिक्षक / शिक्षिका इसमें आपकी सहायता करेंगे।

4. निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग करके अलग-अलग वाक्य बनाइए :

मातृभूमि –

मधुर –

अर्पण –

सरल –

सुख-दुख –

अविचल –

वचन –

धरती –

पाठ से आगे

1. ‘बना दो मधुर मेरा जीवन‘ कविता जैसे ही कोई अन्य प्रार्थना गीत को ढूँढिए और उन्हें याद कीजिए।
2. कविता के भाव को अपने जीवन में उतारने का प्रयास कीजिए।
3. इस कविता को पढ़ने के बाद आप अपने समाज और देश के लिए अच्छे-अच्छे कार्य करने हेतु स्वयं के साथ साथियों को भी प्रेरित कीजिए।
4. शिक्षक हिंदी और ओड़िआ में रचित ऐसी कुछ कविताओं का संग्रह करके छात्रों को सुनाइए और उन्हें भी ऐसी कविताओं का संग्रह करने को प्रेरित कीजिए।

पाठ - 4

तरुण के स्वप्न

स्वप्न तो अनेकों ने देखा। हमारे नेता स्वर्गीय देशबंधु चित्तरंजन दास ने भी एक स्वप्न देखा था। वही स्वप्न उनकी शक्ति का उत्स बना और उनके आनंद का निर्झर रहा। उनके स्वप्न के उत्तराधिकारी आज हम हैं। इसलिए हमारा भी अपना एक स्वप्न है, इसी स्वप्न की प्रेरणा से हम उठते हैं, बैठते हैं, चलते हैं, फिरते हैं और लिखते हैं, भाषण देते हैं, काम-काज करते हैं। वह स्वप्न या आदर्श क्या है ? हम चाहते हैं, एक नया सर्वांगीण स्वाधीन संपन्न समाज और उस पर एक स्वाधीन राष्ट्र। उस समाज में व्यक्ति सब दृष्टियों से मुक्त हो तथा समाज के दबाव से वह मरे नहीं। उस समाज में जातिभेद का स्थान न हो, उस समाज में नारी मुक्त होकर समाज एवं राष्ट्र के पुरुषों की तरह समान अधिकार का उपभोग करे और समाज तथा राष्ट्र की सेवा में समान रूप से हिस्सा ले, उस समाज में अर्थ की विषमता न हो, उस समाज में प्रत्येक व्यक्ति शिक्षा और उन्नति का समान सुअवसर पाए। जिस समाज में श्रम और कर्म की पूरी मर्यादा होगी और आलसी तथा

अकर्मण्य के लिए कोई स्थान नहीं रहेगा, वह राष्ट्र किसी भी विजातीय प्रभाव से हर प्रकार से मुक्त रहेगा। जो राष्ट्र हमारे स्वदेशी समाज के यंत्र के रूप में काम करेगा, सर्वोपरि वह समाज और राष्ट्र भारतवासियों का अभाव मिटाएगा या भारतवासी के आदर्श को सार्थक बनाकर ही स्थिर नहीं होगा, बल्कि विश्व-मानव के समक्ष आदर्श-समाज और आदर्श-राष्ट्र के रूप में गण्य होगा। मैं ऐसे समाज और ऐसे राष्ट्र का ही स्वप्न देखता रहा हूँ। यह स्वप्न मेरे समक्ष नित्य एवं अखंड सत्य है। इस सत्य की प्रतिष्ठा के लिए सब कुछ किया जा सकता है, हर प्रकार का त्याग किया जा सकता है, हर संकट को सहा जा सकता है और इस स्वप्न को सार्थक बनाने के दौरान प्राण देना भी है तो 'वह मरण है स्वर्ग समान'। हे मेरे तरुण भाइयो! तुम्हें देने लायक मेरे पास कुछ भी नहीं है, है सिर्फ यही स्वप्न जो हमें असीम शक्ति और अपार आनंद देता है, जो मेरे क्षुद्र जीवन को भी सार्थक बनाता है। यह स्वप्न मैं तुम्हें उपहारस्वरूप देता हूँ – स्वीकार करो।

–सुभाषचंद्र बोस

लेखक परिचय :

ओड़िशा राज्य के कटक नगर में जन्मे सुभाषचंद्र बोस को पूरा देश 'नेताजी" के नाम से जानता है। भारत को अंग्रेज शासन से मुक्त करना उनका उद्देश्य था। ब्रिटिश शासन के खिलाफ संघर्ष करने के कारण उन्हें कई बार जेल भी जाना पड़ा। उन्होंने 'आजाद हिंद फौज' के माध्यम से अंग्रेजों को चुनौती दी। उन्होंने सैनिकों को 'दिल्ली चलो' और 'जयहिंद' का नारा दिया। उन्होंने देशवासियों से कहा, 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।' उन्होंने एक स्वाधीन राष्ट्र और आत्मनिर्भर समाज का सपना देखा। उनके जीवन के विषय में जानना भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास को जानना ही है।

शब्दार्थ :

स्वप्न - सपना

निर्झर - झरना

सर्वांगीण - हर तरह का

विषमता - असमानता

सुअवसर - अच्छा मौका

अकर्मण्य - बेकार

विजातीय प्रभाव - विपरीत / असंगत प्रभाव

सर्वोपरि - सब के ऊपर / सर्वश्रेष्ठ

नित्य - रोज, दैनिक

अखंड़ सत्य - पूरी तरह सच

के दौरान - के समय

तरुण - युवक, युवा

असीम शक्ति - अत्यधिक बल

क्षुद्र - लघु, छोटा

बातचीत के लिए :

1. सुभाषचंद्र बोस के माता-पिता और जन्मस्थान के संबंध में आपस में चर्चा कीजिए।
2. 'आजाद हिंद फौज' का गठन कब, कैसे और क्यों किया गया था ? सहपाठियों के साथ चर्चा कीजिए।
3. सुभाषचंद्र बोस के व्यक्तित्व के संबंध में बातचीत कीजिए। (शिक्षक विद्यार्थियों की सहायता करेंगे।)
4. 'उस समाज में अर्थ की विषमता न हो' इस पर अपने विचार कक्षा में साझा कीजिए।

सोचिए और लिखिए :

1. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्पों में से चुनकर लिखिए :

(क) 'उनके स्वप्न के उत्तराधिकारी आज हम हैं' यहाँ हम किसके लिए प्रयुक्त हुआ है ?

(i) सुभाषचंद्र बोस के लिए

(ii) देश के तरुण वर्ग के लिए

(iii) चित्तरंजन दास के लिए

(iv) भारतवासियों के लिए

(ख) स्वाधीन राष्ट्र का स्वप्न कैसे साकार होगा ?

(I) आर्थिक असमानता से

(ii) स्त्री-पुरुष के भिन्न अधिकारों से

(iii) श्रम और कर्म की मर्यादा से

(iv) जाति भेद से

(ग) उनके स्वप्न के उत्तराधिकारी आज हम हैं। — 'उत्तराधिकारी' होने से क्या अभिप्राय है ?

(i) हमें उनके स्वप्नों को संजोकर रखना है।

(ii) हमें भी उनकी तरह स्वप्न देखने का अधिकार है।

(iii) उनके स्वप्नों को पूरा करने के लिए हमें ही कर्म करना है।

(iv) उनके स्वप्नों पर चर्चा करने का दायित्व हमारा है।

(घ) सुभाष किसे नित्य और अखंड सत्य कहते हैं –

(i) भारत की गरीबी को

(ii) अंग्रेजों की बहादुरी को

(iii) ईश्वर को

(iv) आदर्श समाज और आदर्श राष्ट्र को

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक - एक वाक्य में लिखिए :

(क) किसका स्वप्न उनकी शक्ति का उत्स बना ?

(ख) स्वाधीन राष्ट्र-गठन करना कौन चाहते थे ?

(ग) समाज में नारी को पुरुषों की तरह क्या उपभोग करना चाहिए ?

(घ) ''तुम्हें देने के लिए मेरे पास कुछ भी नहीं है, है सिर्फ यही स्वप्न'' यह किसका कथन है ?

(ङ) सुभाष कैसा समाज चाहते थे ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए :

(क) नेताजी का स्वप्न क्या था ?

(ख) एक नए सर्वांगीण स्वाधीन संपन्न समाज का अर्थ आप क्या समझते हैं ?

(ग) हम किसी भी विजातीय प्रभाव से राष्ट्र को मुक्त कैसे कर सकते हैं ?

(घ) सुभाष बोस ने उपहारस्वरूप क्या दिया है ?

(ङ) कौन सा मरण स्वर्ग के समान है ?

अनुमान और कल्पना :

1. सुभाषचंद्र बोस ने किन-किन दृष्टियों से व्यक्तियों की मुक्ति की बात की होगी, कल्पना कीजिए और कक्षा में साझा कीजिए।
2. 'तरुण के स्वप्न' शीर्षक क्यों दिया गया है ? कल्पना करके बताइए।
3. 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।' क्या लोगों ने उन्हें खून दिया होगा ? अनुमान लगाइए और अपने विचार साझा कीजिए।
4. आप अनुमान लगाइए कि अपने समाज में किन-किन लोगों को विशेष अधिकार दिलाने की आवश्यकता है।
5. 'तरुण के स्वप्न' की तरह आपके सपने क्या हैं ? कक्षा में सुनाइए।

भाषा-ज्ञान :

1. इस पाठ से गुण बतानेवाले शब्द छाँट कर शब्द समूह को पूरा कीजिए :

जैसे –

अखंड –	सत्य
–	समाज
–	राष्ट्र
–	जीवन
–	शक्ति
–	आनंद

2. <u>'स्वाधीन राष्ट्र'</u> में रेखांकित शब्द 'स्वाधीन' का विपरीत अर्थ देनेवाला शब्द है 'पराधीन'। इसी प्रकार निम्न शब्दों के विपरीत अर्थ देनेवाले शब्द लिखिए। याद रखिए विपरीतार्थक शब्दों को विलोमार्थी शब्द भी कहते हैं।

स्वीकार – .... सार्थक – ....

विषमता –............... क्षुद्र – ....

संपन्न – .... अकर्मण्य – ....

3. सुभाषचंद्र बोस स्वतंत्रता सेनानी थे। वे नेताजी के रूप में परिचित हैं। रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए कि संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त शब्दों को सर्वनाम कहते हैं। इसके छः भेद होते हैं – पुरुषवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, प्रश्नवाचक, संबंध वाचक और निजवाचक।

सर्वनाम

पुरुष वाचक	निश्चय वाचक	अनिश्चय वाचक	प्रश्न वाचक	संबंध वाचक	निज वाचक

पुरुष वाचक:

उत्तम पुरुष	मध्यम पुरुष	अन्य पुरुष
मैं, हम	तू, तुम, आप	यह, वह, ये, वे

(सर्वनाम के संबंध में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए शिक्षक विद्यार्थियों का सहयोग करेंगे।)

4. यहाँ तीन वाक्य दिए गए हैं। जैसे :

चित्तरंजन दास ने एक स्वप्न देखा।

रोशन ने पपीता खाया।

मालती ने कलम खरीदी।

- देखा, खाया, खरीदी – क्रिया के भूतकालिक रूप हैं।
- इन क्रियाओं के मूल रूप हैं — देखना, खाना, खरीदना।
- देखा, खाया, खरीदी से बोध होता है कि ये सब सकर्मक क्रियाएँ हैं ऐसी स्थिति में कर्ता के साथ 'ने' परसर्ग का प्रयोग होगा।
- कर्ता के साथ 'ने' परसर्ग का प्रयोग होने से कर्ता का वाक्य के साथ संबंध टूट जाता है।
- ऐसी स्थिति में क्रिया, कर्म के लिंग-वचन के अनुसार होती है।
- पुल्लिंग में कर्म आने वाले कुछ वाक्य देखिए :

बीरु ने केला खाया।

सोमानाथ ने इतिहास पढ़ा

रोहिणी ने कागज खरीदा।

रजनी ने नाटक देखा।

- स्त्री लिंग में कर्म आने वाले कुछ वाक्य देखिए :

  राम ने चिट्ठी लिखी।

  गोपाल ने रोटी खाई।

  सुमति ने इमली बेची।

  कमला ने किताब पढ़ी।

- जिन भूतकालिक वाक्यों में क्रिया सकर्मक हो और कर्म अनुपस्थित हो, उन वाक्यों में क्रिया पुल्लिंग एक वचन में रहेगी। जैसे :

  हमने पढ़ा।

  तुमने लिखा।

  राजेश ने सुना।

  रश्मि ने कहा।

निम्नलिखित वाक्यों के रिक्त स्थानों को सही क्रिया-रूप से भरिए :

(क) माधुरी ने फल ....। (खाया / खाई)

(ख) मोहन ने केला ....। (खरीदा / खरीदी)

(ग) बच्चे ने बोतल ....। (फेंका / फेंकी)

(घ) लड़की ने तस्वीर ....। (बनाया / बनाई)

(ङ) मैंने कलम ....। (तोड़ा / तोड़ी)

(च) उसने पेंसिल ....। (देखा / देखी)

पाठ से आगे :

1. 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।' यह सुभाषचंद्र बोस के द्वारा दिया गया नारा है। नीचे कुछ नारे दिये गये हैं। आप उनके नाम लिखिए जिन्होंने नारे दिये हों :

नारा	स्वतंत्रता सेनानी
स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है	....
करो या मरो	....

जय जवान, जय किसान ....

मैं आजाद हूँ, आजाद रहूँगा और

आजाद ही मरूँगा ....

इंकलाब जिंदावाद ....

2. आपके प्रिय स्वतंत्रता सेनानी

आप किस स्वतंत्रता सेनानी के कार्यों और विचारों से प्रभावित हैं? कारण सहित लिखिए और कक्षा में चर्चा कीजिए।

पाठ - 5

बेटी

कुछ भी हो जाए
बेटी नहीं हो सकती कभी खोटी ।
हाथ-पाँव न चलें
तो बेटी रख देती मुँह में रोटी ।।
सहारा देती है वह
बुढ़ापे में बन जाती बैसाखी ।
माँ- बाप की दुर्दशा
नहीं रहती बेटी से अनदेखी ।।

करती है सेवा
भर देती है जिंदगी में माया ।
देती शीतल स्पर्श
बन जाती है कल्पवट की छाया ।।
वह है कोमल फूल
आँगन की महक, चाँद का टुकड़ा ।

धुल जाते हैं दुख
देख लेने पर बिटिया का मुखड़ा।।
तनाव, अभाव सब
मिटा देती है बेटी बन अवलंब ।
टीस अकेलापन
हटा देती है बेटी बिना विलंब ।।

दुहिता नाम है
　　　　माँ की लाड़ली, ससुराल की शोभा ।
दुख-दैन्य हटाती
　　　　बिखेर देती, वीरता की विभा ।।
जिजीविषा है वह
　　　　करो घर आई बेटी का अभिनंदन ।
भरोसेमंद है वह
　　　　संवेदना की मूर्ति, शीतल चंदन ।।

–डॉ० लक्ष्मीधर दाश

कवि परिचय :

डॉ० लक्ष्मीधर दाश का जन्म पुरी जिले में हुआ है । वे हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में प्राचार्थ के पद पर काम करके 2011 में सेवा-निवृत्त हुए हैं । वे हिंदी तथा ओड़िआ में लेखन-कार्य से जुड़े हैं । वे मौलिक रचनाओं के साथ अनुवाद का कार्य भी कर रहे हैं । ओड़िआ बाल-साहित्य में उनकी बीस से अधिक किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं । हिंदी में उनके चार कहानी-संग्रह और चार कविता-संग्रह प्रकाशित हुए हैं । ‘बेटी’ ‘बाल सूर्य उग रहा है’ कविता-संग्रह से ली गई है। वे उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के ‘सौहाद्र सम्मान’ सहित अनेक पुरस्कारों से पुरस्कृत और सम्मानित हुए हैं।

शब्दार्थ :

खोटा - बुरा, घटिया
बैसाखी- लाठी, जिसे टेककर लंगड़े चलते हैं
दुर्दशा- बुरी हालत
अनदेखी- बिना देखी हुई
कल्पवट- नंदन वन का वृक्ष, माँगने पर सब कुछ देने वाला
महक- खुशबू, सुवास
मुखड़ा - चेहरा, मुँह
तनाव - टैंशन, परेशानी

अवलंब - सहारा

टीस - पीड़ा, कसक

विलंब - देर

दुहिता - बेटी

लाड़ली - प्यारी, दुलारी

दैन्य - दीनता, दरिद्रता

विभा - कांति, सौंदर्य

जिजीविषा - जीने की इच्छा

अभिनंदन- स्वागत

भरोसेमंद - विश्वसनीय

संवेदना - सहानुभूति, दु:ख की अनुभूति

बातचीत के लिए :

1) माँ-बाप बूढ़े हो जाने के बाद काम कर नहीं पाते । उस समय बेटी क्या करेगी ? इस पर आपस में चर्चा कीजिए।

2) बेटी कैसे बैसाखी बन जाती है ? इस पर कक्षा में चर्चा कीजिए ।

3) बेटी को क्यों कल्पवट की छाया कही जाएगी, उस पर कक्षा में चर्चा कीजिए।

4) बेटी को दुहिता कहने का तात्पर्य क्या है ?

5) बेटी के जन्मदिन मनाने के अवसर पर क्या-क्या होता है, इस पर कक्षा में चर्चा कीजिए।

सोचिए और लिखिए :

1. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्पों में से चुनकर लिखिए :

(क) बेटी माँ-बाप के बुढ़ापे में कैसे बैसाखी बन जाती हैं ?

i) उन्हें सहारा देकर

ii) उन्हें श्रद्धा से देखकर

iii) उनके चरण छूकर

iv) सहारा देने को मन में सोचने पर

(ख) बेटी से क्या अनदेखी नहीं रह सकती ?

i) माँ बाप की वृद्धावस्था

ii) माँ बाप की इच्छा

iii) माँ बाप के हाथ-पाँव की स्थिति

iv) माँ बाप की दुर्दशा

(ग) कल्पवट की क्या विशेषता है ?

i) उसके नीचे बैठने वाला कुछ कल्पना करता है।

ii) कल्पवट कल्पों तक जीवित रहेगा ।

iii) उसे जो कुछ माँगा जाए, वह उसे दे देता है ।

iv) कल्पवट नंदनवन की एक लता है ।

(घ) बेटी चाँद का टुकड़ा क्यों है?

I) वह देखने में पूर्ण नहीं है।

ii) बेटी चाँद की तरह शीतलता और उज्वलता प्रदान करती है ।

iii) वह देखने में सब से सुंदर है ।

iv) वह चाँद की तरह प्रकाश देती है ।

(ङ) देर किए बिना बेटी क्या मिटा देती है ?

i) माँ-बाप का तनाव और अभाव ।

ii) दुख-दैन्य की मात्रा ।

iii) जीने की इच्छा

iv) वीरता का प्रकाश

(च) निम्नलिखित में से कौन-सी बेटी की विशेषता नहीं है ?

i) भरोसेमंद

ii) संवेदना की मूर्ति

iii) शीतल चंदन

iv) उग्रता का अवतार

(छ) बेटी कैसे वीरता की कांति भर देती है ?

i) माँ-बाप की लाड़ली बनकर

ii) माँ बाप के मन में आशा संचार करके

iii) अन्याय के खिलाफ अस्त्रधारण करके

iv) दुख दैन्य दूर करके जीने की इच्छा जगाकर

2. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(क) कौन खोटी नहीं हो सकती ?

ख) किस स्थिति में बेटी मुँह में रोटी रख देती है ?

(ग) कौन जिंदगी में माया भर देती है ?

(घ) कौन चाँद का टुकड़ा है ?

(ङ) कब माँ-बाप के दुख धुल जाते हैं ?

(च) बेटी माँ-बाप को सहारा देकर क्या मिटा देती है ?

(छ) बेटी को कहाँ की शोभा मानी जाती है ?

3) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए:

(क) माँ-बाप की बुरी हालत होने पर बेटी क्या करती है ?

(ख) बेटी को कल्पवट के साथ क्यों तुलना की गई है ?

(ग) बेटी में एक फूल की क्या- क्या विशेषताएँ पाई जाती हैं ?

(घ) मदद न मिलने की स्थिति में बूढ़े माँ-बाप क्या-क्या मानसिक पीड़ा झेलते हैं ?

अनुमान और कल्पना :

अपने समूह में चर्चा कीजिए और लिखिए :

क) कल्पना कीजिए कि किसी एक दंपति के कोई बेटी नहीं है । वह क्या सोचता होगा ?

ख) कल्पना कीजिए कि किन्हीं बूढ़े माँ-बाप की बेटी झगड़ालू है । वे मन में क्या सोचते होंगे ?

ग) यदि किसी बहू का व्यवहार शालीन और वचन मधुर है, उसे उस परिवार में कैसा आदर मिलेगा ।

घ) क्या करके एक बेटी अपने घर और ससुराल, दोनों जगहों पर स्नेह पा सकेगी ?

ङ) किस स्थिति में बूढ़े और बुढ़ियाँ अधिक दिन जीने की इच्छा नहीं रखते ? क्या होने से उनमें फिर जीने की इच्छा उत्पन्न होगी ?

च) बेटे और बेटियों के क्या करने से बूढ़े माँ-बाप उन पर नाराज नहीं होंगे ?

छ) कल्पना कीजिए कि आप अपने माता-पिता की सेवा कर रहे हैं । उस समय आपके मन की भावना कैसी रहती है, बताइए।

भाषा-ज्ञान :

1) 'शीतल स्पर्श' में दो पद हैं । शीतल और स्पर्श । 'स्पर्श' संज्ञा पद है और 'शीतल' उसकी विशेषता बताता है । यह विशेषण है। इस प्रकार नीचे 'क' स्तंभ में कुछ विशेषण दिए गए हैं। उनके साथ आने वाले उपयुक्त संज्ञा रूप को 'ख' स्तंभ से चुनकर जोड़िए :

'क' स्तंभ	**'ख' स्तंभ"**
शीतल	बेटी
लाड़ली	दुख
कोमल	बैसाखी
मजबूत	चंदन
भारी	फूल

2) कविता से कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं और उनके सामने कुछ अन्य शब्द भी दिए गए हैं । उन शब्दों पर घेरा बनाइए, जो समान अर्थ न देते हों ।

शब्द	**अन्य शब्द**
संवेदना	सहानुभूति
विभा	विवाह
विलंब	देर
लाड़ला	कोमल
महक	खुशबू

दुर्दशा	अच्छा अवसर
खोटा	छोटा
भरोसेमंद	विश्वसनीय

3) नीचे दिए गए तीन वाक्य देखिए :

बेटी सेवा करेगी ।

बेटी सेवा करती है ।

बेटी ने सेवा की ।

पहला वाक्य भविष्यत् काल में, दूसरा वाक्य वर्तमान काल में और तीसरा वाक्य भूत काल में है । नीचे दिए गए वाक्यों को भविष्यत् काल और भूत काल में बदलिए :

क) बेटी रोटी देती है ।

ख) सुमन पाठ पढ़ता है ।

ग) तुम रोटी खाते हो ।

घ) वह दो फल खाता है ।

ङ) मैं गुड़िया बेचता हूँ ।

4) **कोई** आ रहा है।

वह भरोसेमंद है ।

इन दो वाक्यों में रेखांकित शब्द हैं - कोई, वह। ऐसे शब्द सर्वनाम कहलाते हैं । जैसे - मैं, हम, तू, तुम, आप, वह, यह, वे, ये आदि। इनका वाक्यों में प्रयोग देखिए :

मैं पढ़ता हूँ । हम पढ़ते हैं ।

तू पढ़ता है । तुम पढ़ते हो। आप पढ़ते हैं।

वह पढ़ता है । वे पढ़ते हैं ।

यह पढ़ता है । ये पढ़ते हैं ।

आप 'लिखना' क्रिया का प्रयोग करके वाक्यों को पुन: लिखिए ।

पाठ से आगे

- माँ-बाप अपनी बेटी को ससुराल में भेजते समय क्या-क्या उपदेश देंगे, उस पर मित्रों के साथ चर्चा कीजिए ।
- बेटी को माता-पिता किस तरह का आशीर्वाद देंगे, उसके बारे में मित्रों के साथ चर्चा कीजिए ।
- अच्छी बेटी की क्या-क्या विशेषताएँ होनी चाहिए ? उस पर मित्रों के साथ चर्चा कीजिए और उसे अपनी कॉपी में लिखिए ।
- ऐसा कभी हुआ है कि आपने बेटी के रूप में कभी माँ की बात नहीं मानी हो । बाद में पछताने पर मन में क्या भावना उत्पन्न हुई होगी, उस पर सोच-विचार करके बोलिए ।
- पुराने जमाने में बेटियों के साथ घर पर कैसा व्यवहार किया जाता था, अब इसमें क्या परिवर्तन आया है ?

पाठ - 6

भक्त कवि बलराम दास

(सिर्फ पढ़ने के लिए)

ओड़िआ साहित्य के भक्ति युग में पाँच संतों के नाम अग्रगण्य हैं। उन्हें पंचसखा भी कहा जाता है। ये पाँच संत कवि हैं – बलराम दास, जगन्नाथ दास, अच्युतानंद दास, अनंत दास और यशोवंत दास। इनमें बलराम दास सबसे बुजुर्ग थे।

बलराम जी का आविर्भाव सन् 1472 ई.में. हुआ था। सारला दास की भाँति वे भी अपने को शूद्र कवि मानते थे। कवि ने स्वयं लिखा है कि वे तत्कालीन गजपति प्रतापरुद्र देव के मंत्री सोमनाथ महापात्र के पुत्र थे। उनकी माता का नाम यमुना देवी था।

बलराम दास जी के द्वारा रचित रामायण ओड़िशा का अत्यंत लोकप्रिय पुराण है। चूँकि उन्होंने जगन्नाथ मंदिर के जगमोहन में बैठकर उसकी रचना की थी, इसलिए इसका दूसरा नाम 'जगमोहन रामायण' भी है। उन्होंने खुद स्वीकार किया है कि जगमोहन रामायण के स्रष्टा स्वयं जगमोहन श्री जगन्नाथ हैं। इसकी रचना दांडी वृत्त (छंद) में होने के कारण इसे 'दांडी रामायण' भी कहते हैं।

बलराम दास जी की रामायण वाल्मीकि रामायण का पूर्णत: भाषांतर नहीं है। कवि वाल्मीकि की संस्कृत रामायण की विषय-वस्तु का व्यतिक्रम दांडी रामायण के विविध प्रसंगों में देखे जा सकते हैं। अधिकांश सर्गों (कांड) में श्रीक्षेत्र के जगन्नाथ महाप्रभु का वर्णन तथा उनके माहात्म्य का उल्लेख है। इसमें वाल्मीकि रामायण के विषयों से हटकर कुछ अलग प्रसंग तो दिए गए हैं, इसके अलावा वाल्मीकि के द्वारा रचित कुछ प्रसंग बलराम दास जी की रामायण में स्थानित नहीं हुए।

बलराम दास की रामायण में ओड़िआ भाषा का बहु प्राचीन अपभ्रंश रूप है। सारला दास के महाभारत और बलराम दास की रामायण की भाषा में ओड़िआ भाषा का वास्तव स्वरूप विद्यमान है। कवि ने लंका काण्ड में लिखा है कि लक्ष्मी-नारायण की वंदना करते समय उन्हें एक ऐश्वरीय शक्ति प्राप्त हुई, जिससे वे रामायण लिखने के लिए प्रेरित हुए। तब उन पर श्रीजगन्नाथ जी की कृपा पड़ी और उन्होंने रामायण की रचना की।

संस्कृत के प्रकांड प्रतिभा-संपन्न विद्वान होने के कारण कवि बलराम दास ने ओड़िआ में पहली बार भगवत् गीता का अनुवाद किया था। इसके अलावा वे सर्वशास्त्र ज्ञाता भी थे। इसलिए उन्होंने भारतीय इतिहास के आदि ग्रंथ वाल्मीकि रामायण का अनुसरण करते हुए भी उसमें उत्कलीय चरित्रों को सम्मिलित किया है।

कवि बलराम दास ने पुराण पुरुष श्री रामचंद्र को वनवास काल में ओड़िशा के हर तीर्थ क्षेत्र का सैर करवाकर अपनी जातीयता का श्रेष्ठत्व प्रतिपादित किया है। वास्तव में देखा जाए तो 'दांडी रामायण' ग्रंथ की रचना तत्कालिन समाज के अल्प शिक्षित व्यक्तियों को नजर में रखते हुए सरल भाषा में की गई थी। इसमें पतिव्रता और सहनशीला सीता, कर्तव्यपरायण अनुज लक्ष्मण, आज्ञाकारी प्रभुभक्त हनुमान, प्रजावत्सल न्यायपरायण श्री रामचंद्र, त्यागवीर भरत, कुटिल नारी मंथरा आदि के बारे में बहुत सुंदर वर्णन है।

बलराम दास जी की एक और लोकप्रियं रचना है – 'लक्ष्मी पुराण'। यह रचना ओड़िशा के घर-घर में हर गुरुवार को पढ़ी जाती है। ओड़िशा में 'माणबसा' त्योहार के समय लक्ष्मी पुराण का पाठ होता है। ओड़िआ गृहिणियों के चाल–चलन, सोच-विचार और नीति-नियम इसमें रूपायित हैं। ओड़िशा जैसे कृषि प्रधान राज्य में यह रचना जन-जीवन के साथ जुड़ी हुई है। इसलिए इसका महत्व बहुत अधिक है। लक्ष्मी समृद्धि, सफलता, सौभाग्य, सौंदर्य, धन-धान्य और कृषि की देवी हैं। बलभद्र पुरुष-प्रधान समाज के प्रतिनिधि हैं। संत बलराम दास ने सामाजिक संस्कार, जातिप्रथा के विलोप, नारी-स्वाधीनता और नारी-स्वाभिमान के प्रति सजग होकर 'लक्ष्मी पुराण' की रचना की है। इसमें दर्शाया गया है कि छोटी जाति की एक चांडाली श्रीया निष्ठा और शुद्ध मन से लक्ष्मी की पूजा करती है तो लक्ष्मी उसके घर पर पहुँचती हैं। इससे रुष्ट होकर बलभद्र और जगन्नाथ लक्ष्मी को घर से निकाल देते हैं। इसके बाद उनका दुर्दिन शुरू हो जाता है। अंत में वे अपनी भूल समझकर लक्ष्मी जी की शरण में आते हैं। फिर लक्ष्मी श्रीमंदिर में प्रवेश करती हैं। परिवार में खुशहाली लौट आती है।

इनके अलावा वेदांत सार गुप्त गीता, अमरकोष गीता, वट अवकाश, गुप्त गीता, ब्रह्मांड भूगोल, बेढ़ा परिक्रमा, सप्तांग टीका, भाव समुद्र, श्री भगवत गीता अर्थ ज्ञान, उज्वलमणि गीता, विराट गीता, दीप्तिसार गीता, पनसचोरी, एक अभ्यास महाभारत (गोचराचर गीता), मनु गीता, गुप्त टीका, मालश्री, ज्ञान परते चुड़ामणि (गद्य) आदि बलराम दास की रचनाएँ हैं।

– डॉ० अजित प्रसाद महापात्र

लेखक परिचय :

डॉ० अजित प्रसाद महापात्र जी हिंदी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान, कटक के पूर्व प्राचार्य हैं। वे एक जानेमाने लेखक और अनुवादक के रूप में परिचित हैं। पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादन के साथ आकाशवाणी कटक तथा दूरदर्शन भुवनेश्वर केंद्र के हिंदी कार्यक्रमों से जुड़े हैं। उनके द्वारा रचित शिक्षा से संबंधित तथा अनूदित कई पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं।

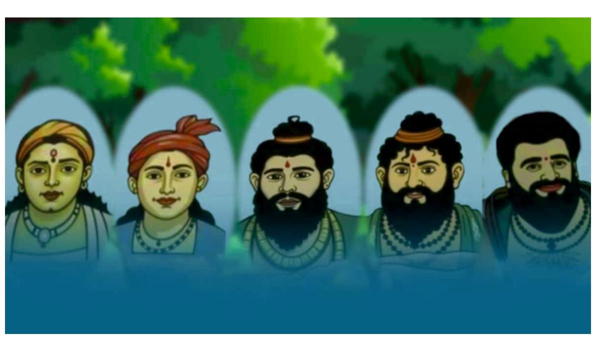

पाठ - 7

स्वदेश

वह हृदय नहीं है, पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।
जो जीवित जोश जगा न सका,
उस जीवन में कुछ सार नहीं।

जो चल न सका संसार - संग
उसका होता संसार नहीं।
जिसने साहस को छोड़ दिया,
वह पहुँच सकेगा पार नहीं।

जिससे न जाति-उद्धार हुआ,
होगा उसका उद्धार नहीं।
जो भरा नहीं है भावों से,
बहती जिसमें रस-धार नहीं।

वह हृदय नहीं है, पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।

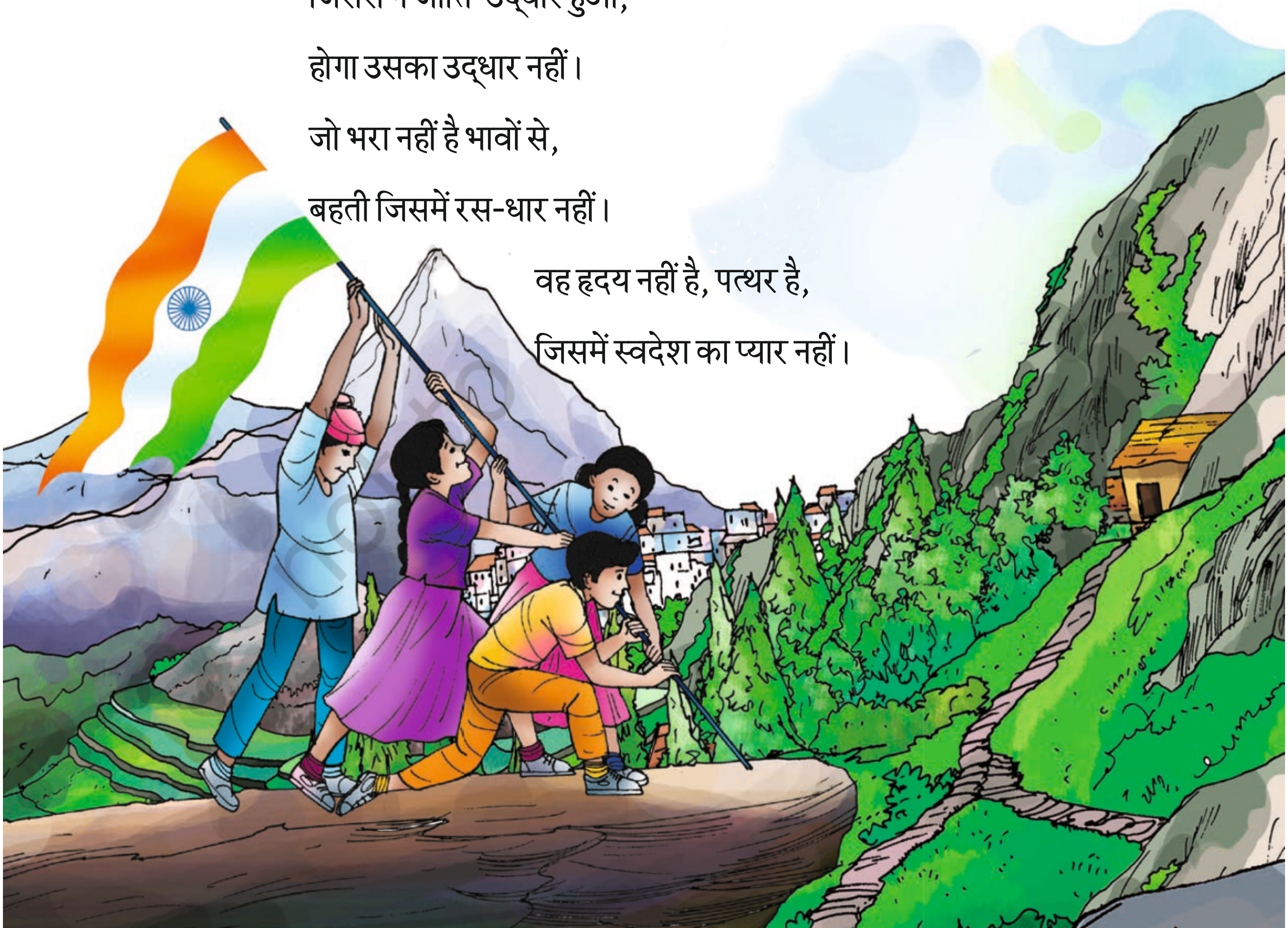

जिसकी मिट्टी में उगे बढ़े,
पाया जिसमें दाना-पानी।
हैं माता-पिता बंधु जिसमें
हम हैं जिसके राजा-रानी।

जिसने कि खजाने खोले हैं,
नव रत्न दिए हैं लासानी।
जिस पर ज्ञानी भी मरते हैं
जिस पर है दुनिया दीवानी।

उस पर है नहीं पसीजा जो,
क्या है वह भू का भार नहीं।
निश्चित है निस्संशय निश्चित,
है जान एक दिन जाने को।

है काल-दीप जलता हरदम
जल जाना है परवानों को।
सब कुछ है अपने हाथों में,
क्या तोप नहीं तलवार नहीं।

वह हृदय नहीं है, पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।

– गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही'

कवि परिचय :

(1883-1972)

'स्वदेश' कविता के रचयिता गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' हिंदी के उन कवियों में से हैं जिन्होंने ब्रजभाषा में कविता लिखना प्रारंभ कर खड़ी बोली के श्रेष्ठ कवियों में अपना स्थान बनाया। उनका जन्म उत्तर प्रदेश के उन्नाव जनपद में हुआ। उन्होंने स्वयं कहा, ''सरकारी नौकरी के कारण 'सनेही' के अतिरिक्त मुझे दूसरा उपनाम 'त्रिशूल' रखना पड़ा।'' राष्ट्र-प्रेम की कविताओं के साथ-साथ उन्होंने किसान, मजदूर, सामाजिक कुरीतियों आदि विषयों पर प्रभावकारी कविताएँ लिखी हैं। 'त्रिशूल तरंग', 'राष्ट्रीय मंत्र', 'कृषक क्रंदन' इनकी उल्लेखनीय रचनाओं में से हैं।

शब्दार्थ :

जोश - उत्साह

साहस - हिम्मत

उद्धार - मुक्ति

रस-धार - रस की धारा, आनंद

दाना-पानी - अन्न-जल, जीविका

लासानी - बेजोड़, जिसका सानी न हो

दीवानी - पगली, जुनूनी

पसीजा - दया से भीगा हुआ

काल-दीप-काल रूपक दीप

परवाना - कीट फतिंगा

तोप - एक हथियार जिससे गोले फेंके जाते हैं।

नवरत्न - नौ रत्नों का समूह (हीरा, माणिक, पन्ना, पुखराज, नीलम, गोमेद, लहसुनिया, गोती, मूँगा)

बातचीत के लिए :

1. कविता में देश-प्रेम के लिए बहुत-सी बातें आई हैं। आप कक्षा में देश-प्रेम पर लघु वक्तव्य प्रस्तुत कीजिए।
2. हमें अपने देश से क्यों प्रेम होना चाहिए ? अपने सहपाठियों के साथ चर्चा कीजिए।
3. स्वदेश प्रेम में देश पर न्योछावर होने वाले कुछ महान बलिदानियों के बारे में अपने गुरुजनों / अध्यापकों से जानकारी प्राप्त करके आपस में चर्चा कीजिए।
4. आप कक्षा में अपने पाँच ऐसे कामों की चर्चा कीजिए जो आपके स्वदेश प्रेम को दर्शाते हों।

सोचिए और लिखिए :

1. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्पों में से चुनकर लिखिए :

(क) ''वह हृदय नहीं है, पत्थर है'' – इस पंक्ति में हृदय के पत्थर होने से क्या तात्पर्य है ?

(i) सामाजिकता

(ii) संवेदनशीलता

(iii) कठोरता

(iv) नैतिकता

(ख) निम्नलिखित में से कौन-सा विषय इस कविता का मुख्य भाव है ?

(i) देश की प्रगति

(ii) देश के प्रति प्रेम

(iii) देश की सुरक्षा

(iv) देश की स्वतंत्रता

(ग) ''हम हैं जिसके राजा-रानी'' – इस पंक्ति में 'हम' शब्द किसके लिए आया है ?

(I) देश के प्राकृतिक संसाधनों के लिए

(ii) देश की शासन व्यवस्था के लिए

(iii) देश के समस्त नागरिकों के लिए

(iv) देश के सभी प्राणियों के लिए

(घ) कविता के अनुसार कौन-सा हृदय पत्थर के समान है ?

(I) जिसमें धीरज न हो।

(ii) जिसमें स्नेह का भाव न हो।

(iii) जिसमें देश-प्रेम का भाव न हो।

(iv) जिसमें स्फूर्ति और उमंग का भाव न हो।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक - एक वाक्य में लिखिए :

(क) कवि ने कैसे हृदय को पत्थर कहा है ?

(ख) किसके जीवन में कोई सार नहीं होता ?

(ग) कवि के अनुसार किसका संसार नहीं होता ?

(घ) कवि के अनुसार किसका उद्धार नहीं होगा ?

(ङ) ज्ञानी भी किस पर मरते हैं ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

(क) 'संसार-संग' चलने से आप क्या समझते हैं ? जो व्यक्ति 'संसार-संग' नहीं चलता, संसार उसका क्यों नही हो पाता ?

(ख) 'जाति-उद्धार' से आप क्या समझते हैं ? जाति-उद्धार के बिना हमारा उद्धार क्यों नहीं हो सकता ?

(ग) हमारे अंदर मातृभूमि से प्रेम क्यों होना चाहिए ? कविता के आधार पर लिखिए।

(घ) मातृभूमि ने खजाने के रूप में हमें क्या-क्या दिया है ?

(ङ) देश की सुरक्षा के लिए हमें क्या करना होगा ? कविता के आधार पर लिखिए।

4. 'स्वदेश' कविता को याद करके नीचे दी गई कविता की रिक्त पंक्तियों को पूरा कीजिए :

(क) वह हृदय नहीं है, पत्थर है

............................।

जो जीवित जोश जगा न सका,

............................।

(ख) जो चल न सका संसार-संग,

............................।

जिसने साहस को छोड़ दिया,

............................।

(ग) जिससे न जाति-उद्धार हुआ,

............................।

जो भरा नहीं है भावों से,

............................।

अनुमान और कल्पना :

1. कल्पना कीजिए कि स्वतंत्रता संग्राम में देश के लिए बलिदान देने वाले स्वदेश प्रेमियों के मन में कैसे-कैसे विचार आते होंगे ? किन्हीं पाँच विचारों को लिखिए।

2. आप स्वदेश प्रेम से प्रभावित होकर देश के लिए भविष्य में कौन-कौन-से काम करना चाहेंगे बताइए।

3. जिस व्यक्ति में स्वदेश प्रेम न हो, उससे देश की क्या-क्या हानियाँ होने की आशंका है, विचार कीजिए।

भाषा-ज्ञान :

1. निम्नलिखित शब्दों का विलोमार्थी शब्द पाठ से ढूँढ़कर लिखिए :

(क) मृत – ....

(ख) मरण – ....

(ग) खाली – ....

(घ) परदेश – ....

(ङ) घृणा – ....

(च) रात – ....

2. एक का बोध कराने वाले शब्द को एकवचन और एक से अधिक का बोध कराने वाले शब्द को बहुवचन कहते हैं। यथा – एकवचन – बच्ची। बहुवचन – बच्चियाँ।

निम्नलिखित शब्दों का वचन बदल कर पाठ में प्रयुक्त शब्दों को लिखिए :

एकवचन		बहुवचन
(क)	–	जातियाँ
(ख)	–	तोपें
(ग)	–	रस धाराएँ
(घ)	–	तलवारें

3. सहायक क्रिया 'है' का प्रयोग एकवचन में और 'हैं' का प्रयोग बहुवचन में होता है। जैसा कि पाठ में है – 'वह हृदय नहीं है, पत्थर है।' 'जिसने कि खजाने खोले हैं।'

आप नीचे दिए गए स्थानों में 'है' और 'हैं' का प्रयोग होने वाले दो-दो सामान्य वाक्य लिखिए :

(क) ....है।

......................................है।

(ख) ....हैं।

......................................है।

पाठ से आगे

1. एक व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में भी ऐसे क्या- क्या काम कर सकता है जो देश-प्रेम से जुड़े हों, विचार कीजिए ।

2. ‘देश-प्रेम‘ से संबंधित कोई अन्य कविता याद कीजिए और विद्यालय में उचित अवसर पर उसका वाचन कीजिए ।

3. देश-प्रेमी सैनिक दुश्मनों का सामना करने के लिए तोप, तलवार, बंदूक आदि का प्रयोग करते हैं, आप बताइए कि निम्नलिखित देश-प्रेमियों के अस्त्र-शस्त्र क्या होगे ?

   विद्‌यार्थी ....

   अध्यापक ....

   कृषक ....

   चिकित्सक ....

   वैज्ञानिक ....

   श्रमिक ....

   पत्रकार ....

4. ओड़िआ भाषा की देशप्रेममूलक कविताओं का संग्रह कर कक्षा में पाठ कीजिए।

पाठ - 8

मेरा बचपन

हाय बचपन ! तेरी याद नहीं भूलती । वह कच्चा टूटा घर, वह पयाल का बिछौना, वह नंगे बदन, नंगे पाँव खेतों में घूमना, आम के पेड़ों पर चढ़ना, सारी बातें आँखों के सामने फिर रही हैं ।

मैं अपने चचेरे भाई हलधर के साथ दूसरे गाँव में एक मौलवी साहब के यहाँ पढ़ने जाया करता था । मेरी उम्र आठ साल थी, हलधर मुझसे दो साल जेठे थे । हम दोनों प्रात:काल मटर और जौ का चबेना लेते थे ।

रामलीला में भी आनंद आता था । मेरे घर से बहुत थोड़ी दूर पर रामलीला मैदान था । जिस घर में लीला पात्रों का रूप-रंग भरा जाता था, वह तो मेरे घर से बिलकुल मिला हुआ था । दो बजे दिन से पात्रों की सजावट शुरू होने लगती ।

मैं दोपहर से ही वहाँ जा बैठता । जिस उत्साह से दौड़कर छोटे-मोटे काम करता, उस उत्साह से तो आज अपनी पेंशन लेने भी नहीं जाता ।

गुल्ली-डंडा सब खेलों का राजा है । अब भी कभी लड़कों को गुल्ली-डँडा खेलते देखता हूँ तो जी लोट-पोट हो जाता है कि इनके साथ जाकर खेलने लगूँ । न लॉन की जरूरत, न कोर्ट की, न थापी की, मजे से किसी पेड़ से एक टहनी काट ली, गुल्ली बना ली और दो आदमी भी आ गए तो खेल शुरू हो गया । विलायती खेलों में सबसे बड़ा ऐब है कि उनके सामान महँगे होते हैं । पर हम अंग्रेजी चीजों के पीछे ऐसे दीवाने हो रहे हैं कि अपनी सभी चीजों से अरूचि हो गई है । हमारे स्कूलों में हरेक लड़के से तीन चार रुपए सालाना केवल खेलने की फीस ली जाती है । किसी को यह नहीं सूझता कि भारतीय खेल खिलाएँ जो बिना दाम, कौड़ी के खेले जाते हैं । ठीक है, गुल्ली से आँख फूट जाने का भय रहता है तो क्या क्रिकेट से सिर टूट जाने का भय नहीं रहता ! अगर हमारे माथे में गुल्ली का दाग आज तक बना हुआ है तो हमारे कई दोस्त ऐसे भी हैं जो थापी को बैसाखी से बदल बैठे । खैर, यह तो अपनी-अपनी रुचि है, मुझे गुल्ली ही सब

खेलों से अच्छी लगती है । प्रात:काल घर से निकल जाना, पेड़ पर चढ़कर टहनियाँ काटना और गुल्ली-डंडा बनाना । वह उत्साह, वह लगन, वह खिलाड़ियों के जमघट, वह लड़ाई - झगड़े, वह सरल स्वभाव, अमीर-गरीब का बिलकुल भेद न था, अभिमान की गुंजाइश ही न थी ।

घरवाले बिगड़ रहे हैं, पिताजी चौके पर बैठे रोटियों पर अपना क्रोध उतार रहे हैं । न नहाने की सुध है, न खाने की । गुल्ली है जरा-सी, पर उसमें दुनिया भर की मिठाइयों की मिठास और तमाशों का आनंद भरा है ।

– प्रेमचंद

लेखक परिचय :

मुंशी प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई, 1880 को वाराणसी के पास लमही गाँव में हुआ था । उनका असली नाम धनपत राय था । उनके पिता का नाम अजायब लाल मुंशी और माता का नाम आनंदी देवी था । प्रेमचंद हिंदी और उर्दू साहित्य के एक मूर्धन्य लेखक थे । उन्हें उपन्यास सम्राट कहा जाता है। उनकी मृत्यु 08 अक्तूबर, 1936 को हुई थी।

कृतियाँ : सेवासदन, निर्मला, रंगभूमि, कर्मभूमि, गबन, गोदान (उपन्यास)

पंचपरेमश्वर, बूढ़ी काकी, सतरंज के खिलाड़ी, आत्माराम, दुर्गा का मंदिर आदि (कहानी)

'मानसरोवर' में सारी कहानियाँ संगृहीत है ।

कर्बला, संग्राम, प्रेम की वेदी । (नाटक) ।

शब्दार्थ :

पयाल - पुआल (ठंड से बचने के लिए लोग पुआल तापते हैं)

जेठे - बड़े

लोट-पोट होना - हँसी से पागल हो जाना (यह एक मुहावरा है)

थापी - पिटनी, थपथपाने की क्रिया

टहनी - डाली, वृक्ष की शाखा

ऐब - दोष, बुराई, खोट

सालाना - हर साल

बैसाखी - डंडा, जिसे टेककर लंगडे चलते हैं, इसका दूसरा अर्थ है - त्योहार

जमघट - भीड़

गुंजाइश - संभावना

सुध - होश, याद

बातचीत के लिए :

1) रामलीला की तैयारियों में कौन-कौन से काम में लेखक अधिक उत्साहित थे, सहपाठियों के साथ चर्चा कीजिए।

2) आपको लेखक के बचपन की कौन-कौन सी बातें सबसे अच्छी लगीं ? वे बातें आपको अच्छी क्यों लगीं ? कक्षा में चर्चा कीजिए ।

3) खेलते समय चोट न लगे, इसके लिए आप क्या-क्या कर सकते हैं ? मित्रों के साथ चर्चा कीजिए ।

4) लेखक के पिता और घर के अन्य सदस्य चौके में बैठे-बैठे क्या-क्या बातें करते होंगे ? आपस में चर्चा कीजिए।

सोचिए और लिखिए :

1) निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्पों में से चुनकर लिखिए :

(क) लेखक और उनके भाई पढ़ने के लिए कहाँ जाते थे ?

i) गुरुजी के यहाँ

ii) मौलवी साहब के यहाँ

iii) महात्मा जी के यहाँ

iv) मामा जी के यहाँ

(ख) रामलीला के लिए लीला पात्रों की सजावट कब से शुरू होने लगती थी ?

i) दोपहर को दो बजे से

ii) अपराह्न चार बजे से

iii) शाम को पाँच बजे से

iv) सूर्यास्त हो जाने पर

(ग) लेखक ने किस खेल को खेलों का राजा कहा है ?

i) कबड्डी खेल को

ii) क्रिकेट खेल को

iii) 'गुल्ली-डंडा' खेल को

iv) हॉकी खेल को

(घ) लेखक के माथे पर आज तक किसका दाग है ?

i) कटने का

ii) घाव का

iii) चेचक का

iv) गुल्ली का

2) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(क) लेखक के चचेरे भाई का नाम क्या था ?

(ख) लेखक की उम्र और चचेरे भाई की उम्र कितनी थी ?

(ग) स्कूलों में हरेक लड़के से खेल के नाम पर कितने रुपए की फीस ली जाती थी ?

(घ) 'गुल्ली-डंडा' खेल शुरू करने के लिए कितने आदमियों की जरूरत होती है ?

(ङ) लेखक और उनके भाई दोनों प्रात:काल क्या खाते थे ?

3) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

(क) लेखक किन बातों को भुला नहीं पाते हैं ?

(ख) लेखक को रामलीला में आनंद क्यों आता था ?

(ग) 'गुल्ली-डंडा' खेल को देखकर लेखक के मन में क्या-क्या प्रतिक्रियाएँ होती हैं ?

(घ) लेखक ने भारतीय खेल और बिलायती खेल के बारे में क्या कहा है ?

अनुमान और कल्पना :

1) लेखक के बचपन के कौन-कौन से काम आपने भी किए हैं ?

2) लेखक अपने बचपन में खेलने के लिए स्वयं गुल्ली-डंडा बना लेते थे । आप कौन-कौन से खेल-खिलौने बना लेते हैं ? कोई एक बनाकर कक्षा में लेकर आइए और समूह के साथ खेलिए ।

3) अनेक बच्चे कपड़े धोने के लिए काम में आनेवाली 'थापी' को बल्ले की तरह उपयोग कर लेते हैं। आप अपने घर या पास-पड़ोस की किन वस्तुओं को खेल-खिलौने की तरह उपयोग कर लेते हैं ? कक्षा में साझा कीजिए ।

4) लेखक अपने बचपन में अनेक काम उत्साह से दौड़-दोड़कर किया करते थे । आप कौन-कौन-से काम बहुत उत्साह से करते हैं ?

भाषा-ज्ञान :

1) संबंधकारक में पुल्लिंग एकवचन शब्द के पूर्व 'का', पुल्लिंग बहुवचन शब्द के पूर्व 'के' एवं स्त्रीलिंग एकवचन तथा बहुवचन दोनों शब्दों के पूर्व 'की' का प्रयोग होता है । आप पाठ से ऐसे दो-दो प्रयोगों को ढूँढकर लिखिए : जैसे-की सजावट

का.................. के......................

का.................. के......................

की......................

की......................

2) 'लिंग' का अर्थ है, चिह्न । पुरुष जाति का बोध कराने वाले शब्द पुल्लिंग एवं स्त्री जाति का बोध कराने वाले शब्द स्त्रीलिंग होते हैं । आप पाठ से पाँच-पाँच पुल्लिंग एवं स्त्रीलिंग शब्द ढूँढकर लिखिए:

उदाहरण- पुल्लिंग (बदन) स्त्रीलिंग (याद)

पुल्लिंग शब्द	**स्त्रीलिंग शब्द**
क)	क).............................
ख)	ख).............................
ग)	ग).............................
घ)	घ).............................
ङ)	ङ).............................

3) निम्नलिखित शब्दों का बहुवचन रूप पाठ से ढूँढकर लिखिए : जैसे- कमरा - कमरे

क) चचेरा............................ दूसरा.......................................

ख) अपना............................ मेरा.......................................

ग) इनका............................ महँगा.......................................

घ) ऐसा............................ दीवाना.......................................

ङ) लड़का.......................... माथा.......................................

4) किसी भी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाला शब्द विशेषण होता है । जैसे-कंजूस सेठ (यहाँ 'कंजूस' विशेषण और 'सेठ' संज्ञा है ।)

आप निम्नलिखित रिक्त स्थानों में पाठ से ढूँढ़कर विशेषण/संज्ञा शब्द लिखिए :

क) ....घर

ख) दूसरे.................

ग) .... साल

घ) चचेरे....................

ङ) ....खेल

च) सारी...................

पाठ से आगे

1. इस पाठ में लेखक ने अपने बचपन का खेल गुल्ली-डंडे के बारे में बताया है । आप भी अपने प्रिय खेलों का अनुभव बताइए ।

2. आपका पसंदीदा खेल कौन-सा है ? इस खेल के प्रति आपका अधिक लगाव क्यों है ? आप अपना अनुभव कक्षा में साझा कीजिए ।

3. आप विभिन्न खेल खेलते होंगे। यदि किसी खेल में आप को भयंकर चोट पहुँची, तो आप उसी खेल के प्रति और रुचि रखेगें या नहीं । आप पर खेलों का प्रभाव कैसे पड़ा ? अपना अनुभव बताइए ।

पाठ - 9

मेरी कुटिया देखो

ओ महलों में रहनेवालो !
आकर मेरी कुटिया देखो ।
हम जमीन से जुड़े इंसान
मिट्टी पर सो रही बिटिया देखो ।

तुम्हारे महलों में है क्या ?
इधर है पूरी सृष्टि देखो ।
कुत्ता, बिल्ली, चूहा, बकरी,
तोता, मुर्गा, गिरगिट देखो ।

तेज दिमाग कमा लो करोड़ों
रखो रुपए, बैंक में रखो ।
ठन-ठन गोपाल, सदा हँसमुख
आकर मुझसे हँसना सीखो ।

दिखते सूरज, चाँद और तारे
शुद्ध मलय अबाध फिरे ।

देती प्रकृति सुख और शांति,
अपनी धरती की ममता देखो ।

ओ महलों में रहनेवालो !
आकर मेरी कुटिया देखो ।

–प्रो.डॉ. सत्यनारायण पंडा

कवि परिचय :

प्रोफेसर सत्यनारायण पंडा हिंदी और ओड़िआ दोनों भाषाओं के कवि, आलोचक और अनुवादक के रूप में जाने जाते हैं। आप के आवाहन, कविता बहुवर्णा, पल्लीवीणा, ग्राम्यवाणी कविता संग्रह तथा शिशु-किशोरोपयोगी कई कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं। संप्रति आप हिंदी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान, कटक में अध्यक्ष के रूप में कार्यरत हैं। आप विविध साहित्यिक और सांस्कृतिक संस्थाओं की ओर से पुरस्कृत और सम्मनित हुए हैं।

शब्दार्थ :

महल - हवेली, भवन

कुटिया - झोंपड़ी, कुटीर

ठन-ठन गोपाल - कंगाल, गरीब

मलय - सुगंधित शीतल पवन, हवा

अबाध - बाधारहित, बिना रुकावट से

शुद्ध - निर्मल, स्वच्छ

धरती - पृथ्वी, संसार

सदा हँसमुख - हमेशा खुश दिखनेवाला

जमीन - भूमि

सृष्टि - सृजन

बातचीत के लिए :

1. क्या आप के घर के आसपास महल हैं ? महलों में क्या-क्या सामग्री होती हैं, आपस में चर्चा कीजिए।
2. अपने आसपास कुटिया बनाकर भी लोग रहते होंगे। उस परिवेश के संबंध में सहपाठियों से चर्चा कीजिए।
3. क्या आप भी हँसना पसंद करते हैं, हँसने से क्या-क्या लाभ मिलते हैं, कक्षा में बातचीत कीजिए।

सोचिए और लिखिए :

1. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्पों में से चुन कर लिखिए :

(क) 'जमीन से जुड़े इंसान' का अर्थ है –

(i) जिस आदमी के पास काफी जमीन हो।

(ii) जो इंसान जमीन से प्यार न करता हो।

(iii) जमीन से प्यार करनेवाला आम आदमी।

(iv) जमीन बेचने और खरीदने का काम करनेवाला।

(ख) ठन-ठन गोपाल का तात्पर्य है –

(I) घुटनों के बल पर चलनेवाला गोपाल।

(ii) एकदम गरीब आदमी।

(iii) वह ग्वाला जो गो-पालन से दूर हो चुका हो।

(iv) इनमें से कोई नहीं।।

(ग) 'आकर मुझसे हँसना सीखो' कौन यह बात कहता है ?

(I) मकान मालिक

(ii) किरायेदार

(iii) ठेकेदार

(iv) कुटिया में रहनेवाला

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक - एक वाक्य में लिखिए :

(क) महलों में कौन रहते हैं ?

(ख) किसान और मजदूर कहाँ रहते हैं ?

(ग) चूहा, बकरी, मुर्गा ये सब किसके पास देखे जाते हैं ?

(घ) महलवालों को कौन ललकारता है ?

(ङ) तेज दिमाग किसे कहा गया है ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

(क) कौन अपने आप को ठन-ठन गोपाल कहता है और क्यों ?

(ख) कुटिया में रहनेवाला खुद को सुखी मानता है, इसके पीछे क्या कारण रहा होगा ?

(ग) 'हम जमीन से जुड़े इंसान' इसमें कौन-सा भाव झलकता है ?

अनुमान और कल्पना :

1. कुटिया में क्या - क्या सुख-सुविधाएँ नहीं होतीं, जो महल में होती हैं ? कक्षा में चर्चा करके इसकी एक सूची बनाइए।
2. अब वायु प्रदूषण बढ़ गया है। ऐसी स्थिति में शुद्ध वायु पाने के लिए आप क्या करना चाहते हैं, अपने सहपाठियों को सुनाइए।
3. क्या आप भी महलों में रहने की कल्पना करते हैं ? तो फिर कुटिया में रहनेवालों के दु:ख पर अपने विचार कक्षा में साझा कीजिए।
4. कुटिया में रहनेवालों की तरह क्या आप में भी पशु-पक्षियों के प्रति प्रेम भाव है ? आप के घर में पाले गये पशु-पक्षियों के संबंध में कुछ किस्से कक्षा में सुनाइए।

भाषा-ज्ञान :

1. इस कविता में कई शब्द हैं, जिनके अंत में तुक बन रहा है। जैसे-रखो-देखो। इन्हें तुकांत शब्द कहते हैं। कविता के आधार पर नीचे दिए गए रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

   तारे – ....

   देखो – ....

   कुटिया – ....

2. समान अर्थ देनेवाले शब्दों को समानार्थी शब्द कहते हैं। याद रखिए, समानार्थी शब्दों को पर्यायवाची भी कहते हैं। नीचे दिए गए शब्दों के पर्यायवाची रूप लिखिए :

   महल – ....

   कुटिया – ....

   धरती – ....

सूरज – ....

चाँद – ....

मलय – ....

3. इस कविता में 'ठन-ठन गोपाल' जैसे पदों का प्रयोग किया गया है, इसका अर्थ होता है – कंगाल यानी बहुत ही गरीब। ऐसे लाक्षणिक अर्थ देनेवाले पद या पद समूह को मुहावरा कहते हैं। नीचे कुछ मुहावरे अर्थ सहित दिए गए हैं। अपने शिक्षक के सहयोग से इनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

गुदड़ी का लाल – साधारण परिवार में योग्य व्यक्ति का होना

आँखों का तारा – बहुत प्यारा

अंधे की लकड़ी – एकमात्र सहारा

कान का कच्चा – हर बात पर विश्वास करनेवाला

अक्ल का दुश्मन – मूर्ख

पाठ से आगे

1. अपने देश में कुछ लोग वातानुकूलित महलों में रहते हैं, जब कि अधिकांश लोग रोटी-कपड़ा-मकान की तलाश में रहते हैं। ऐसा क्यों हो रहा है सोचिए। हमें कुछ करना होगा, जिससे अमीर-गरीब का भेद मिटेगा। क्या आप भी सोच रहे हैं कि आत्मनिर्भरता जरूरी है, कक्षा में चर्चा कीजिए और स्वावलंबी बनने का संकल्प लीजिए।

2. जाति-भेद, वर्ग-भेद दूर करनेवाली कुछ ओड़िआ कविताओं का संग्रह कर पढ़िए।

पाठ - 10

कोणार्क

सूर्य सृष्टि के मूल आधार हैं । अथर्व वेद में कहा गया है कि सूर्य संपूर्ण स्थावर-जंगम जगत की आत्मा हैं। प्राचीन काल में भी सूर्य-पूजा प्रचलित थी । कोणार्क एक प्राचीन अर्कक्षेत्र है ।

कपिल संहिता में इस क्षेत्र को मैत्रेय वन कहा जाता था, क्योंकि यहाँ ऋषि मैत्रेय ने तपस्या की थी । विष्णु ने गयासुर का बध करके अपना आयुध 'पद्म' यहाँ रखा था । इसलिए यह पद्म-क्षेत्र के नाम से प्रसिद्ध है । स्कंद पुराण में इसे 'सूर्य-क्षेत्र' पद्म पुराण में 'अर्क-क्षेत्र' और ब्रह्म पुराण में 'कोणादित्य' कहा गया है ।

द्वापर में शांब इस अर्क-क्षेत्र में बारह वर्ष सूर्य की आराधना करके कुष्ठ रोग से मुक्त हुए थे । उन्हें चंद्रभागा नदी में स्नान करते समय सूर्य देव का एक मणि- विग्रह मिला । उन्होंने वहाँ एक मंदिर बनावाकर विग्रह की प्रतिष्ठा की थी ।

ओड़िशा में सूर्य-पूजा की परंपरा प्राचीन है । बाद में मिले एक ताम्र फलक के अनुसार छठी सदी में कंगोद में सूर्य-पूजा प्रचलित थी । केशरी वंश के राजा पुरंदर केशरी ने कोणार्क में चंद्रभागा के किनारे पर एक सूर्य-मंदिर की प्रतिष्ठा की थी ।

गंग वंश के राजा अनंग भीम देव की रानी कस्तूरी कामोदिनी देवी यहीं सूर्य की उपासना करके पुत्रवती हुई थी । उनकी इच्छानुसार पुत्र लागुंला नरसिंह देव (प्रथम) ने यहाँ चंद्रभागा नदी के गहरे 'पद्मतोला' दह को पाटकर भगवान सूर्य के लिए जगन्नाथ मंदिर से ऊँचा एक भव्य मंदिर बनावाने की परिकल्पना की । नदी के किनारे पर मंदिर न बनवा कर 'पद्मतोला दह' का स्थान इसलिए चुना गया कि वहाँ सूरज की पहली किरण पड़ती है ।

मंदिर-निर्माण की जिम्मेदारी सदाशिव सामंतराय महापात्र को दी गई । मंदिर- निर्माण के संबंन्ध में यह कथा आती है कि शिबेई सांतरा (सदाशिव सामंतराय) पद्मतोला दह पाटने के लिए दह के बीच में पत्थर डाले । जल-स्रोत में पत्थर बह गए । शिबेई चिंतित हो गए । एक बार रास्ते में जाते समय वे एक बुढ़िया की कुटिया में पहुँचे । बुढ़िया जान गई कि अतिथि भूखे हैं । इसलिए प्यार से उसने अतिथि के लिए मड़वे की गर्म लपसी परोसी । शिबेई सांतरा ने थाली के बीच से लपसी खाने को हाथ डाला तो हाथ जल गया । यह देखकर बुढ़िया ने हँसते हुए कहा, ''शिबेई सांतरा

दह के बीच में पत्थर डालता है । तुम उसकी तरह थाली के बीच में क्यों हाथ डालते हो । एक तरफ से धीरे-धीरे खाओ। हाथ नहीं जलेगा ।'' यह सुनकर शिबेई सांतरा के दिल को बात छू गई । वे दह के एक तरफ से रेत डलवाते गए और दह को पाटने में समर्थ हुए । इसके बाद मंदिर बनवाने का काम शुरू हुआ ।

225 फुट ऊँचा एक रथाकार मंदिर बनवाया गया । सिंहद्वार पर उसे खींचने की मुद्रा में पत्थर के सात घोड़े बनवाए गए । मंदिर के पत्थर के चौबीस पहिए थे । हर पहिए में मुख्य आठ आरे थे। सात फुट नौ इंच लंबे और साथ फुट चौड़े सिंहासन के पद्मपीठ पर खड़े होने की मुद्रा में उत्सव प्रतिमा प्रतिष्ठित हुई । आज भी विद्यमान मुखशाला 127 फुट 9 इंच ऊँचा है । मंदिर की प्रतिष्ठा सन् 1256 ई की माघ सप्तमी के दिन हुई थी । मंदिर निर्माण के लिए लगभग बारह साल लगे थे ।

मंदिर के पहियों, घोड़ों, दीवारों पर लगाई गई मूर्तियों, फल-फूलों, वृक्ष-लताओं और पशु-पक्षियों की नक्काशी अत्यंत रमणीय हैं । इसे देखने रोज हजारों पर्यटक आते हैं । वे मंदिर की निर्माण-शैली और सुंदरता देखकर चमत्कृत होते हैं ।

कोणार्क के रथ के पहिए सूर्य घड़ी के काम में आते हैं । दो मुख्य आरों के बीच एक पतला आरा होता है । मुख्य आठ आरे आठ पहिए के सूचक हैं । उत्तर की दिशा के मुख्य आरे को रात के बारह बजे का समय माना जाता है। समय जानने के लिए पहिए के केंद्र पर उँगली रखने से विपरीत दिशा में सूर्य-प्रकाश की छाया उत्पन्न होती है । छाया को देखकर समय का निर्धारण किया जाता है ।

कोणार्क-मंदिर के कलश-स्थापन को लेकर एक दंतकथा है । मंदिर के एक कारीगर बिशु महारणा अपने पुत्र के जन्म होने से कुछ दिन पहले मंदिर निर्माण के लिए चले गए थे । बेटा धरमा थोड़े बड़े होने पर पिताजी से मिलने अपने बाग के पके बेर और घर के पालतु कुत्ते को साथ लेकर गया ओर उनसे मिला । उस समय राजा ने आदेश निकाला था कि उसी रात में ही मंदिर का कलश-स्थापन हो जाना चाहिए । चूँकि कोई ठीक से कलश-स्थापन नहीं कर सकते थे, इसलिए धरमा मंदिर के शिखर पर गया और ठीक से कलश-स्थापन करके नीचे उतर आया । उसने दूसरे कारीगरों को बिशु से यह कहते हुए सुना कि तुम बारह सौ कारीगरों के लिए दायी हो या अपने बेटे के लिए दायी हो ? यह सुनकर

धरमा ने कारीगर-कुल के मान की रक्षा करने के लिए फिर से मंदिर के शिखर पर चढ़ा वहीं से नीचे कुदकर अपने प्राण दे दिए ।

गजपति पुरुषोत्तम देव (1607-1621) के समय तक यह मंदिर अक्षुण्ण था। उनके पुत्र नरसिंहदेव (तृतीय) (1621-1647) के नवम अंक (1626-27) में मंदिर ढह गया था । इसके साथ ओड़िशा के भास्कर्य और स्थापत्य की महत्वपूर्ण कृतियाँ विलुप्त हो गई । संयोगवश आज भी मंदिर की मुखशाला सुरक्षित है ।

– संकलित

शब्दार्थ :

स्थावर - अचर, स्थिर

जंगम- चलने-फिरने वाला

चक्षु - आँख

उपासना - पूजा

विग्रह - मूर्ति

ताम्र - ताँबा

परिकल्पना - योजना

मुद्रा - भंगिमा

रमणीय - सुदंर

पर्यटक - भ्रमण करने वाला, यात्री

निर्धारण - स्थिर करना, तय करना

दंतकथा - किंबदंती

मान- सम्मान

अक्षुण्ण- जो न टूटा हो

बातचीत के लिए :

1. अथर्व वेद में सूर्य के संबंध में क्या कहा गया है । आपस में चर्चा कीजिए ।
2. कोणार्क पदम क्षेत्र नाम से क्यों प्रसिद्ध है ? मित्रों से कहिए।
3. कौन-से पुराण में कोणार्क कोणादित्य कहलाता है ? इस पर कक्षा में चर्चा कीजिए ।
4. शांब को चन्द्रभागा नदी से क्या मिला था ? शांब ने उसका उपयोग कैसे किया ? सहपाठियों को सुनाइए ।
5. कोणार्क को देखकर पर्यटक चमत्कृत क्यों होते हैं ? इस पर चर्चा कीजिए।
6. कोणार्क मंदिर के निर्माण के समय क्या-क्या समस्याएँ थीं, शिक्षक की सहायता से चर्चा कीजिए ।

सोचिए और लिखिए :

1. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्पों में से चुनकर लिखिए :

(क) किसने द्वापर युग में चन्द्रभागा में आकर तपस्या की थी ?

(i) श्रीराम ने

(ii) श्रीकृष्ण ने

(iii) शांब ने

(iv) नारद ने

(ख) किसने चन्द्रभागा के किनारे पर पहला सूर्य-मंदिर बनवाया था ?

(i) रानी कस्तूरी देवी ने

(ii) अनंगभीम देव ने

(iii) ययाति केशरी ने

(iv) पुरंदर केशरी ने

(ग) 'कोणार्क' मंदिर में पत्थर के कितने पहिए लगे हैं ?

(i) 7

(ii) 24

(iii) 12

(iv) 4

(घ) कोणार्क मंदिर में कौन समय के सूचक होते हैं ?

(i) पहिए

(ii) घोड़े

(iii) आरे

(iv) सिंह

(ङ) धरमा अपने साथ क्या लेकर मंदिर निर्माण-स्थल पर गया था ?

(i) पके बेर

(ii) शिल्प-शास्त्र

(iii) एक लाठी

(iv) छेनी

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(क) 'कपिल संहिता' में कोणार्क के बारे में क्या उल्लेख किया गया है ?

(ख) शांब को चन्द्रभागा नदी में स्नान करते समय क्या मिला था ?

ग) कैसे पता चला कि कंगोद में छठी सदी में सूर्य-पूजा प्रचलित थी ?

(घ) कस्तूरी कामोदिनी देवी की इच्छा क्या थी ?

(ङ) कोणार्क मंदिर की ऊँचाई कितनी थी ?

(च) धरमा क्या लेकर अपने पिता से मिलने गया था ?

(छ) कोणार्क मंदिर के निर्माण में कितना समय लगा था ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

(क) कोणार्क के और क्या-क्या नाम हैं ?

(ख) राजा लांगुला नरसिंह देव (प्रथम) ने क्या बनवाने की परिकल्पना की थी ?

ग) 'पद्मतोला दह' की क्या विशेषता है ?

(घ) शिबेई सांतरा क्यों दह को एक तरफ से पाटने लगे ?

(ङ) कोणार्क मंदिर के पहिए से कैसे समय निर्धारित होता है ?

(च) धरमा ने क्यों मंदिर के कलश की स्थापना की ?

(छ) धरमा ने क्यों प्राण त्याग दिए ?

अनुमान और कल्पना :

1. शास्त्रों और पुराणों में अर्कक्षेत्र के महत्व का वर्णन नहीं मिलता तो क्या होता ? आप अपने विचार सहपाठियों के साथ साझा कीजिए ।
2. मंदिर की ऊँचाई 225 फुट तक न होकर और थोड़ी कम होती तो क्या होता कल्पना कीजिए ।
3. मंदिर के रख-रखाव का उचित ध्यान दिया जाता तो क्या कोणार्क मंदिर आज भी सुरक्षित रहता ? रख-रखाव के लिए क्या किया जाना चाहिए था ? अपने विचार व्यक्त कीजिए ।
4. मान लीजिए, कोणार्क मंदिर विद्यमान है। एक विकसित कोणार्क शहर की कल्पना कीजिए और कक्षा में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए ।
5. लगभग बारह साल तक कोणार्क मंदिर का निर्माण कार्य चलता रहा । कल्पना कीजिए कि उसी दौरान और क्या क्या विकासमूलक कार्य बाधित हो गए थे ? इस पर अपने विचार कक्षा में साझा कीजिए ।

भाषा-ज्ञान :

1. इस पाठ में ऐसे कुछ शब्द आए हैं, जिनके अंत में कुछ जोड़कर नए शब्द बनाए गए हैं।

   प्रतिष्ठित - प्रतिष्ठा + इत

   सुदंरता - सुंदर + ता

   शब्द के अंत में लगने वाले ऐसे शब्दांश प्रत्यय कहलाते हैं । नीचे दिए गए शब्दों से प्रत्ययों को अलग कीजिए :

   पुष्पित, ईमानदार, बेइज्जती, लेखन, स्मरणीय, पूजा, पढ़ाई, लगाव, दिखावा, दिखावट, चिकनाहट

2. पाठ में कुछ पद आए हैं, जो सर्वनाम कहलाते हैं । ये हैं- इस, यह, उन्हें, उन्होंने, उनकी, उनका, तुम

   ऐसे अन्य सर्वनाम हैं - मैं, हम, तू, तुम, आप, वह, वे, जो, कोई, कौन, क्या।

   इनका प्रयोग वाक्यों में इस प्रकार होगा -

मैं पढ़ता हूँ ।	मैं पढ़ती हूँ।
हम पढ़ते हैं ।	हम पढ़ती हैं।
तू पढ़ता है ।	तू पढ़ती है ।
तुम पढ़ते हो।	तुम पढ़ती हो ।
आप पढ़ते हैं ।	आप पढ़ती हैं ।
वह पढ़ता है ।	वह पढ़ती है।
वे पढ़ते हैं ।	वे पढ़ती हैं ।

   आप 'लिखना' क्रिया का प्रयोग करके इस प्रकार के वाक्य बनाइए ।

3. कुछ सर्वनाम परसर्ग युक्त होकर रूप बदल देते हैं ।

   जैसे - यह + ने = इसने

   वह + से = उससे

   ये + को = इनको, इन्हें

   वे + को = उनको, उन्हें

   जो + का = जिसका

   जो (बहुवचन) + का = जिनका

   इनका वाक्यों मे प्रयोग कीजिए ।

4. **निम्नलिखित पदबंधों में रेखांकित कारक-चिह्नों पर ध्यान दीजिए :**

आय - व्यय का हिसाब

सूर्य-पूजा की परंपरा

कंगोद में सूर्य पूजा

रोग से मुक्त

आठ पहरों के सूचक

छाया को देखकर

ऊपर के पदबंधों में आए कारक चिह्न हैं -

का, की, में, से, के , को

व्याकरण में इन्हें परसर्ग भी कहते हैं। ये परसर्ग विभिन्न कारकों में प्रयुक्त होते हैं। हिंदी में कारक आठ हैं। नीचे कारकों के नाम और उनके परसर्ग दिए गए हैं । ये हैं :

कारक	**परसर्ग**
कर्ता	ने, को, से
कर्म	को, से
करण	से, के द्वारा, के साथ
संप्रदान	को, के लिए
अपादान	से
संबंध	का/के/की, रा/रे/री, ना/ने/नी
अधिकरण	में, पर
संबोधन	हे, ओ, अरे, अजी

ऊपर दिए गए परसर्गों का प्रयोग कर कुछ पदबंध बनाइए और उन्हें अपने मित्रों को दिखाकर उन पर चर्चा करते समय कक्षा में अध्यापक की मदद लीजिए ।

5. इस पाठ में कुछ शब्द आए हैं, जिनमें मूल शब्द के साथ एक शब्दांश जुड़ा है। जैसे-निर्माण, परिकल्पना, उत्पन्न। इनके शब्दांशों और शब्दों को अलग करने से होगा :

निर् + माण, परि + कल्पना, उत् + पन्न,

जो शब्दांश शब्द के प्रारंभ में आकर उसका अर्थ बदल देता है उसे ‘उपसर्ग‘ कहते हैं ।

देखिए : 'देश' शब्द के साथ कई उपसर्ग जुड़कर शब्द के अर्थ कैसे बदल देते हैं ।

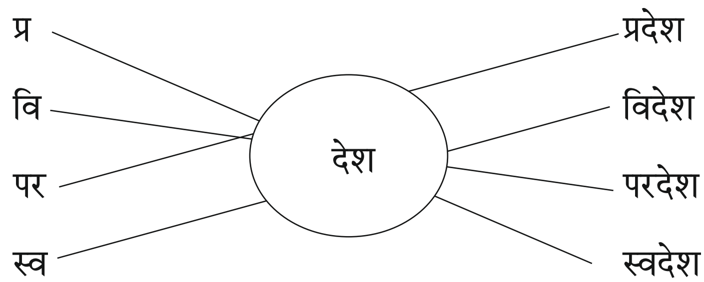

उसी प्रकार देखिए :

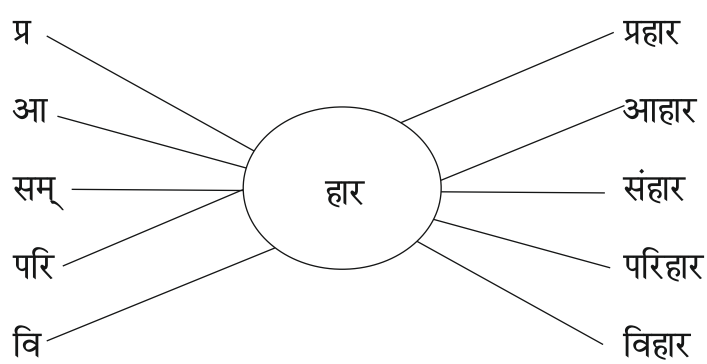

अब निम्न शब्दों के दोनों भागों को अलग कीजिए : प्रदान, पराभव, अपयश, आदेश, उपहार, विजय, अतिशय, अधिकार, अनुवाद, परिचय, उपहार, उत्कंठा, सम्मान, प्रतिकूल, सुकुमार ।

पाठ से आगे

- आज के समय में राजा नरसिंह देव (प्रथम) होते तो वे मंदिर न बनावाकर और क्या करते ? मित्रों के साथ चर्चा करके उन कार्यों की सूची बनाइए ।
- कोणार्क 'पद्मतोला' दह पर न बनकर किनारे पर बनता तो जल-संपदा पर क्या प्रभाव पड़ता ?
- जन-कल्याण के लिए मंदिर-निर्माण की जगह उसी धन राशि से आज की परिस्थिति में और क्या किया जा सकता है, इसके संबंध में सोचिए और जनकल्याण में हिस्सेदार बनिए ।

पाठ - 11

एक आशीर्वाद

जा,
तेरे स्वप्न बड़े हों
भावना की गोद से उतरकर
जल्द पृथ्वी पर चलना सीखें
चाँद-तारों-सी अप्राप्य सच्चाइयों के लिए
रूठना-मचलना सीखें
हँसें
मुसकराएँ
गाएँ
हर दीए की रोशनी देखकर ललचाएँ
उँगली जलाएँ
अपने पाँवों पर खड़े हों।
जा,
तेरा स्वप्न बड़े हों।

– दुष्यंत कुमार

कवि परिचय :

दुष्यंत कुमार एक प्रसिद्ध कवि, कहानीकार और भजनकार थे। उनका जन्म उत्तर प्रदेश के बिजनौर जिले के राजपुर के नवादा गाँव में 1933 को हुआ था। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त की। आकाशवाणी, भोपाल में भी काम किया। स्वल्प समय में उन्होंने हिंदी साहित्य को विविधतापूर्ण रचनाओं एवं जीवंत भाषा से समृद्ध किया। उन्होंने 'एक कंठ विषपायी' (काव्य नाटक), 'सूर्य का स्वागत' आवाजों के घेरे, जलते हुए वन का वसंत (काव्य संग्रह) जैसे प्रसिद्ध रचनाएँ कीं। 'साए में धूप' इनका सर्वाधिक चर्चित गजल संग्रह है। 30 दिसंबर 1975 को मात्र 42 वर्ष की आयु में वे चल बसे।

शब्दार्थ :

स्वप्न - सपना, ऊँची कल्पना

भावना - चिंतन, इच्छा

जल्दी - शीघ्र, तुरंत

अप्राप्य - जो प्राप्त न हो सके

दीए - बहुत-से दीपक

रोशनी - प्रकाश

बातचीत के लिए :

1. स्वप्न कैसे होने के लिए कवि कहते हैं ? उस पर कक्षा में चर्चा कीजिए।
2. पृथ्वी पर क्या सीखने के लिए कहा गया है ? ऐसा स्वप्न क्यों कहा गया है, टोली में चर्चा कीजिए ?
3. अपना मनोबल बढ़ाने के संबंध में कविता में क्या कहा गया है ? सहपाठियों के साथ चर्चा कीजिए।

सोचिए और लिखिए :

1. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्पों में से चुनकर लिखिए :

(क) इस कविता में किसे संबोधित किया गया है ?

(I) युवा वर्ग को

(ii) नागरिकों को

(iii) बच्चों को

(iv) श्रमिकों को

(ख) 'तेरे स्वप्न बड़े हों' – इस पंक्ति में स्वप्न से क्या आशय है ?

(I) कल्पना की उड़ान भरना

(ii) आकांक्षाएँ और रुचियाँ रखना

(iii) बहुत-सी उपलब्धियाँ पाना

(iv) बड़े लक्ष्य निर्धारित करना

(ग) 'उँगली जलाएँ' पंक्ति में उँगली जलाने का भाव है –

(I) चुनौतियों को स्वीकार करना

(ii) प्रकाश का प्रसार करना

(iii) अग्नि के ताप का अनुभव करना

(iv) कष्टों से न घबराना

(घ) 'अपने पाँवों पर खड़े हों' – इस पंक्ति का आशय क्या है ?

(I) अपने पैरों पर खड़ा होना

(ii) सफलता प्राप्त करना

(iii) कठिनाइयों का सामना करना

(iv) आत्मनिर्भर होना

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक - एक वाक्य में लिखिए :

(क) कविता में किस पर चलने के लिए कहा गया है ?

(ख) किसके लिए रूठने-मचलने की बात कही गयी है ?

(ग) क्या देखकर ललचाने के लिए कहा गया है ?

(घ) कवि ने क्या जलाने के लिए कहा है ?

(ङ) कवि के अनुसार क्या बड़े होने चाहिए ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

(क) कवि ने क्यों भावना की गोद से उतरने को कहा है ?

(ख) चाँद-तारों सी अप्राप्य सच्चाइयों के लिए रूठना - मचलना सीखें – इस पंक्ति का भावार्थ लिखिए।

(ग) ''जा, तेरे स्वप्न बड़े हों'' – इसका आशय क्या है ?

अनुमान और कल्पना :

1. कविता में सपनों के बड़े होने की बात की गई है। आपके अनुसार बड़े सपने कौन-कौन-से हो सकते हैं ? क्यों ?

2. 'हर दीए की रोशनी देखकर ललचाएँ / उँगली जलाएँ' पंक्ति में सपनों और लक्ष्यों को पूरा करने के लिए ललक की बात की गई है। ललक के साथ और क्या-क्या होना आवश्यक है और क्यों ? (संकेत – योजना, प्रयास आदि)

3. कल्पना कीजिए कि आपका सपना ही आपका मित्र है। आपको उससे बातचीत करनी हो तो क्या बात करेंगे ?

4. यदि आप किसी को आशीर्वाद देना चाहते हैं तो आप किसे और क्या आशीर्वाद देगें और क्यों ?

5. इसमें सपने को मनुष्य की तरह हँसते, मुस्कराते, गाते बताया गया है। ऐसी अन्य विशषताओं का भी अनुमान कीजिए।

6. आपको अपने माता-पिता, शिक्षक तथा परिजनों से किस तरह के आशीर्वाद मिलते हैं ? आप छोटों के प्रति कैसे शुभेच्छा प्रकट करते हैं ? अपनी कॉपी में लिखिए।

भाषा-ज्ञान :

1. इस कविता में संज्ञा शब्द 'स्वप्न' को केंद्र में रखकर कई क्रिया-शब्दों को जोड़ा गया है, जैसे-चलना, रखना, मचलना, सीखना, हँसना, मुस्कुराना, गाना, ललचाना। आप भी किसी संज्ञा के साथ विभिन्न क्रिया शब्दों का प्रयोग कीजिए।

जैसे – बादल को
घिरते देखा है
गरजते देखा है
बरसाते देखा है

2. नीचे दिए गए रिक्त स्थानों में 'स्वप्न' शब्द के तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए : –

स्वप्न

3. कविता में से कुछ चुने हुए शब्द नीचे दिए गए हैं और उनके सामने कुछ अन्य शब्द भी दिए गए हैं। उन शब्दों पर घेरा बनाइए जो समान अर्थ न देते हों :

शब्द	अन्य शब्द			
पृथ्वी	धरा	बसुधा	अवनि	सुता
चाँद	मधुकर	शशि	निशाकर	मयंक
तारे	नक्षत्र	सोम	तारक	उडुगण
रोशनी	प्रकाश	लालिमा	उजाला	आलोक
स्वप्न	सपना	इच्छा	यथार्थ	कल्पना
दीया	दीन	ज्योति	दीपक	प्रदीप

4. 'आना' और 'जाना' दो क्रियाएँ हैं। शिक्षक छात्रों के दो समूह बनाकर उन्हें 'आना-जाना' क्रियाओं का प्रयोग करते हुए सार्थक वाक्य बनाने के लिए निर्देश दें। तत्सहित अन्य क्रियाओं के भी प्रयोग बताएँ।

5. निम्नलिखित शब्दों से सार्थक वाक्य बनाइए :

स्वप्न : ....

सच्चाई : ....

भावना : ....

रोशनी : ....

पृथ्वी : ....

पाठ से आगे

(क) कविता के माध्यम से बड़े लक्ष्य निर्धारित करने और उन्हें पूरा करने का आशीर्वाद दिया गया है। दिन-प्रतिदिन के जीवन में आपको माता-पिता, अध्यापकों एवं परिजनों से किस प्रकार के आशीर्वाद मिलते हैं। अपनी कॉपी में लिखिए।

(ख) अपने से छोटों के प्रति आप जो शुभेच्छा प्रकट करते हैं, लिखिए।

(ग) आप क्या करना चाहते हैं और क्या पाना चाहते हैं? उन्हें एक पर्ची पर लिखिए और अपने शिक्षक को दीजिए। शिक्षक इन पर्चियों पर लिखे सपनों को पढ़कर सुनाएँ। विद्यार्थी अपने सपनों को पूरा करने के लिए अपनी योजना बताएँ।

पाठ - 12

पारंपरिक नृत्य : छऊ

भारत के सभी प्रदेशों में विभिन्न त्योहार, उत्सव, मेले आदि अत्यंत हर्षोल्लास से मनाए जाते हैं। इन अवसरों पर नृत्य और अभिनय की परंपराएँ सदियों से चली आ रही हैं। नृत्य तो कई प्रकार के हैं, जैसे – लोक नृत्य, शास्त्रीय नृत्य, आधुनिक नृत्य आदि। इनमें से लोक नृत्य जन-जीवन के साथ जुड़ा हुआ है। शास्त्रीय नृत्य की तरह ये नृत्य नाट्यशास्त्र के नियमों से बंधे हुए नहीं होते। इसलिए लोकनृत्य एकदम सीधे-सादे और ताल-लय-छंद से जुड़े हुए होते हैं। ये नृत्य क्षेत्रीय परंपराओं तथा भारतीय सांस्कृतिक विविधताओं को प्रदर्शित करते हैं। भांगड़ा, गरवा, घूमर, दांडिया, झूमर, बिहू, लावणी, डालखाई, संबंलपुरी, घुमुरा, छऊ आदि बहुत सारे नृत्य लोकनृत्य के अंतर्गत आते हैं। छऊ एक लोकनृत्य होने के साथ-साथ इसे अर्ध-शास्त्रीय नृत्य की मान्यता भी मिली है। यह नृत्य हमारी परंपरा से जुड़ा हुआ है।

छऊ एक अत्यंत मनमोहक नृत्य है, जिसे दर्शक भाव-विभोर होकर ध्यान पूर्वक देखते हैं। इस अर्ध-शास्त्रीय नृत्य में सामरिक और लोककला का मिश्रण हुआ है। 'छऊ' शब्द 'छावनी' से आया है, जिसका मतलब है – सैनिकों का शिविर या सैनिकों का डेरा। राजाओं के शासन के समय सैनिक जो युद्ध-कलाओं का प्रदर्शन करते थे, उसी से छऊ नृत्य की उत्पत्ति हुई है। इसलिए नृत्य में सामरिक कला और लोक-कला घुल-मिल गई हैं। नृत्य से पहले आराध्य देवी-देवताओं की पूजा धूम-धाम से की जाती है। फिर नृत्याभिनय आरंभ होता है। नृत्याभिनय कहने का अर्थ है कि इसमें नृत्य के साथ अभिनय भी है। नृत्य के समय कलाकार मुख्य रूप से मूक अभिनय करते हैं। जो भी गीत और संवाद होते हैं वे सब नेपथ्य से दिए जाते हैं। इसमें पारंपरिक वाद्य-यंत्रों का इस्तेमाल होता है, जैसे – ढोल, नगाड़ा, डुगडुगी, बाँसुरी, घुमसा, तुरही, शहनाई आदि। नृत्य के कथानक मुख्य रूप से पौराणिक आख्यान या स्थानीय लोककथाओं से ही लिए जाते हैं।

छऊ नृत्य की तीन शैलिया हैं, जैसे – सरायकेला छऊ, पुरुलिया छऊ और मयूरभंज छऊ। मुख्य रूप से नृत्य का प्रदर्शन जहाँ-जहाँ होता है, उस जगह के नाम के अनुसार नृत्य का नाम रखा गया है। झारखंड के सरायकेला (सढ़ेइकला) और

इसके आसपास के गाँवों में सरायकेला छऊ का विकास पंद्रहवीं सदी में हुआ था। जब यह नृत्य विकसित हुआ था तब सरायकेला तथा इससे सटे इलाके कलिंग के गजपति महाराजा के शासनाधीन थे। पुरुलिया छऊ का आरंभ उन्नीसवीं शताब्दी में हुआ था। पश्चिम बंगाल के पुरुलिया जिले में बाघमुंडी के भूमिज राजा मदनमोहन सिंहदेव के शासन काल में इस शैली की उत्पत्ति हुई थी।

मयूरभंज छऊ ओड़िशा के मयूरभंज जिले की अपनी लोक कला है। इसकी उत्पत्ति मयूरभंज के जंगलों में आदिवासियों के द्‌वारा लगभग अठ्‌ठारहवीं शताब्दी में हुई थी और बाद में उन्नीसवीं शताब्दी में इसका विकास एक सामरिक कला के रूप में हुआ। फिर इसे वहाँ के राजा का प्रोत्साहन मिला। सबसे पहले मयूरभंज के महाराजा यदुनाथ भंज इस नृत्य को देखकर मुग्ध हुए और उन्होंने इसे प्रोत्साहित करने का निर्णय लिया।

छऊ नृत्य की तीन शैलियों में सबसे प्रमुख भिन्नता, इसमें उपयोग होनेवाले मुखौटों से ही पता चलता है। सरायकेला छऊ में प्रतीकात्मक मुखौटों का उपयोग किया जाता है। ये मुखौटे कुछ छोटे आकार के होते हैं। पुरुलिया छऊ के मुखौटे बड़े आकार के होते हैं। इसके साथ अभिनेता की वेशभूषा भी चरित्र के अनुसार होती है। पर मयूरभंज छऊ नृत्य का प्रदर्शन बिना मुखौटे के किया जाता है। वैसे देखा जाए तो उन्नीसवीं सदी के अंत तक इस नृत्य में मुखौटे का प्रचलन था। बाद में केवल चेहरे पर रंग तथा पात्र के अनुरूप वेशभूषा का प्रयोग होने लगा। चेहरे पर मुखौटे न होने के कारण कलाकारों को मंच पर घूमने-फिरने की काफी आजादी मिलती है। दरअसल मयूरभंज के तत्कालीन महाराजा श्रीरामचंद्र भंजदेव ने इस नृत्य में मुखौटों का प्रचलन बंद करवाया था।

वैसे देखा जाए तो छऊ नृत्य पूर्वी भारत की आदिवासी लोक परंपरा से शुरू होकर अर्ध-शास्त्रीय नृत्य के रूप में विकसित हो गया है। विभिन्न त्योहारों के दौरान छऊ के नृत्याभिनय की परंपरा रही है। त्योहारों के समय आनंद-उल्लास का माहौल रहता है। ऐसे माहौल में और अधिक रंग भरने के लिए यह नृत्य सहायक होता है। हमारे इस सांस्कृतिक धरोहर को संभाल कर रखने की आवश्यकता है।

2010 में छऊ नृत्य को संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) द्वारा अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में मान्यता दी गई है, जो कि हमारे लिए गौरव की बात है।

—आशीष कुमार राय

लेखक परिचय :

प्रस्तुत पाठ के रचयिता श्री आशीष कुमार राय ओड़िशा के जाने-माने खेल-लेखक के रूप में परिचित हैं। खेलों के अलावा अन्य विषयों पर भी वे लिखते आए हैं। एक अनुवादक के रूप में भी वे जाने जाते हैं। हिंदी से ओड़िआ तथा ओड़िआ से हिंदी में अनूदित उनकी कई किताबें प्रकाशित हुई हैं।

शब्दार्थ :

त्योहार - पर्व
हर्षोल्लास - आनंद-उल्लास
अवसर - मौका
सदी - शताब्दी
क्षेत्रीय - स्थानीय
परंपरा - प्रथा
मनमोहक - मन को मोह लेनेवाला
सामरिक - सेना से संबंधित
विभोर - मंत्र-मुग्ध
उत्पत्ति - उद्‌भव, आरंभ
मूक - मौन, गूँगा
संवाद - कथोपकथन
नेपथ्य - रंगमंच के पीछे का स्थान
इस्तेमाल - व्यवहार, उपयोग
कथानक - कथा-वस्तु, उपाख्यान
प्रोत्साहन - उत्साह बढ़ाना, प्रेरणा
निर्णय - फैसला
दरअसल - वास्तव में, सचमुच
अमूर्त - अप्रत्यक्ष
विरासत - उत्तराधिकार में मिला, पारंपरिक सूत्र से मिला
लोक नृत्य - ये ऐसे पारंपरिक नृत्य हैं, जो किसी निर्दिष्ट शैली से जड़ित होते हैं। ऐसे नृत्य, जो कि प्राचीन नाट्य शास्त्र के नियमों का पालन करते हैं।

बातचीत के लिए :

1. क्या आप नृत्य के शौकीन हैं? यदि हैं, तो आपको कौन-सा नृत्य अधिक अच्छा लगता है? इस पर कक्षा में चर्चा कीजिए।
2. क्या आपने कभी 'छऊ नृत्य' देखा है? अगर आपने देखा है, तो इस नृत्य ने आपको कैसे प्रभावित किया? इसे अपने सहपाठियों को बताइए।
3. आप लोग 'ओड़िशी नृत्य' और 'संबंलपुरी नृत्य' से परिचित होंगे। ओड़िशी एक शास्त्रीय नृत्य है और संबंलपुरी एक लोक नृत्य है। इन नृत्यों के बारे में आप जो कुछ भी जानते हैं, उन पर चर्चा कीजिए।
4. नृत्य करने से शरीर पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है, इस पर अपने विचार रखिए।

सोचिए और लिखिए :

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर लिखिए :**

(क) छऊ किस प्रकार का नृत्य है –

(I) सांस्कृतिक नृत्य

(ii) शास्त्रीय नृत्य

(iii) अर्ध-शास्त्रीय नृत्य

(iv) आधुनिक नृत्य

(ख) छऊ नृत्य की कितनी शैलियाँ हैं –

(I) दो शैलियाँ

(ii) तीन शैलियाँ

(iii) चार शैलियाँ

(iv) पाँच शैलियाँ

(ग) किस शैली का नृत्य जन-जीवन के साथ जड़ित है?

(I) लोक नृत्य

(ii) शास्त्रीय नृत्य

(iii) अर्ध-शास्त्रीय नृत्य

(iv) ओड़िशी नृत्य

(घ) छऊ नृत्य की किस शैली में मुखौटों का इस्तेमाल नहीं होता ?

(I) सरायकेला छऊ

(ii) पुरुलिया छऊ

(iii) मिदनापुर छऊ

(iv) मयूरभंज छऊ

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक - एक वाक्य में लिखिए :

(क) कौन-से नृत्य नाट्य शास्त्र के नियमों से बंधे हुए होते हैं ?

(ख) 'छऊ' शब्द कहाँ से आया है ?

(ग) नृत्य से पहले किनकी पूजा की जाती है ?

(घ) नृत्याभिनय का मतलब क्या है ?

(ङ) छऊ नृत्य की शैलियों के नाम क्या हैं ?

(च) सरायकेला छऊ का विकास कब हुआ था ?

(छ) किनके शासन काल में पुरुलिया छऊ की उत्पत्ति हुई थी ?

(ज) यदुनाथ भंज किस राज्य के महाराजा थे ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

(क) कुछ लोक नृत्यों के नाम लिखिए।

(ख) छऊ नृत्य की उत्पत्ति कहाँ से हुई थी ?

(ग) छऊ नृत्य में कौन-कौन से वाद्य-यंत्रों का उपयोग होता है ?

(घ) मयूरभंज छऊ की उत्पत्ति कब, कहाँ और किनके द्वारा हुई थी ?

(ङ) छऊ नृत्य के मुखौटों के बारे में बताइए।

4. रिक्त स्थानों की पूर्ति पाठ के आधार पर कीजिए :

(क) छऊ नृत्य एक अत्यंत .... नृत्य है।

(ख) इसमें .... वाद्य-यंत्रों का इस्तेमाल होता है।

(ग) सरायकेला छऊ में .... मुखौटे का उपयोग किया जाता है।

(घ) मयूरभंज के तत्कालीन महाराजा .... ने नृत्य में मुखौटों का प्रचलन बंद करवाया था।

(ङ) तौहारों के समय .... का माहौल रहता है।

अनुमान और कल्पना :

(1) सोचिए, अगर दुनिया में कोई भी नृत्य न होता, तो क्या होता ?

(2) नृत्य-गीत की परंपराएँ मनुष्य समाज को कैसे आगे बढ़ाती हैं ? इस पर सोच विचार कीजिए।

(3) पहले नृत्य, गीत तथा मनोरंजन के विभिन्न साधनों को आगे बढ़ाने के लिए राजा-महाराजाओं से प्रोत्साहन मिलता था। अब इनके लिए समर्थन कौन दे रहे हैं ?

(4) आप संयुक्त राष्ट्र का शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) के बारे में यदि कुछ जानते हैं तो बताइए।

भाषा-ज्ञान :

(1) निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए :

त्योहार –

मतलब –

युद्ध –

इस्तेमाल –

माहौल –

(2) निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग कर एक-एक वाक्य बनाइए :

लोक नृत्य –

अभिनय –

कलाकार –

विकास –

प्रदर्शन –

3. निम्नलिखित शब्दों में से पुल्लिंग और स्त्रीलिंग शब्दों को अलग कीजिए :

त्योहार, उत्सव, नृत्य, परंपरा, कला, संस्कृति, देवता, शासन, विविधता, शैली, गाँव, विकास, मुखौटा, आजादी, निर्णय, माहौल

4. कुछ क्रियाओं के मूल रूप देखिए :

होना, करना, रहना, देना, लगना, पड़ना, कहना, बुलाना, लेना, आना, मिलना, सकना, बनाना, लिखना, जाना।

अर्थ के आधार पर क्रिया के दो भेद होते हैं।

वे हैं – सकर्मक क्रिया और अकर्मक क्रिया। इनमें से कुछ क्रियाएँ सकर्मक हैं। कुछ क्रियाएँ अकर्मक हैं। वे इस प्रकार हैं:

सकर्मक क्रियाएँ - करना, देना, कहना, बुलाना, लेना, बनाना, लिखना

अकर्मक क्रियाएँ – होना, रहना, लगना, पड़ना, मिलना, सकना, जाना

जिस वाक्य में कर्म आता है, या आने की संभावना रहती है, उस वाक्य की क्रिया सकर्मक होती है।

क्रिया सकर्मक है या अकर्मक, यह जानने के लिए वाक्य के साथ 'क्या' या 'किसको' जोड़कर प्रश्न किया जाता है। उत्तर मिले या मिलने की संभावना रहे तो क्रिया सकर्मक होगी, अन्यथा अकर्मक होगी।

आप अपनी टोली में पाठ में आए वाक्यों को पढ़िए। 'क्या' या 'किसको' जोड़कर प्रश्न पूछिए। उत्तर मिले तो उन्हें सकर्मक क्रियावर्ग में लिखिए। उत्तर न मिले तो उन्हें अकर्मक क्रियावर्ग में लिखिए। आपस में उन पर चर्चा कीजिए। अध्यापक से पूछकर सही उत्तर की पुष्टि कीजिए।

5. इस पाठ में आए कुछ वाक्य इस प्रकार हैं :

उत्सव हर्षोल्लास से मनाए जाते हैं।

धूमधाम से पूजा की जाती है।

दर्शक ध्यानपूर्वक देखते हैं।

हम क्रिया के साथ 'कैसे' जोड़कर प्रश्न पूछने से उत्तर में ये रेखांकित पद आते हैं। ये पद क्रिया की विशेषता बताते हैं। इन्हें क्रिया-विशेषण कहते हैं।

क्रिया-विशेषण चार प्रकार के होते हैं। जैसे –

(क) रीतिवाचक क्रिया विशेषण।

जैसे - तेज, चुपके-चुपके, अनायास, धीरे-धीरे, विनय पूर्वक

(ख) कालवाचक क्रिया - विशेषण

जैसे – हमेशा, आजकल, कल, लगातार, शाम को

(ग) स्थानवाचक क्रिया - विशेषण

जैसे – भीतर, बाहर, सामने, यहाँ, पीछे

(घ) परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण।

जैसे – बहुत, ज्यादा, इतना, कम, पर्याप्त

इन क्रिया-विशेषणों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए। अपनी टोली में इन पर चर्चा कीजिए। शिक्षक से पूछकर सही उत्तरों की पुष्टि कीजिए।

पाठ से आगे

इन नृत्यों के बारे में तथा कुछ अन्य नृत्यों के बारे में भी जानकारी हासिल कीजिए।

विभिन्न नृत्यों के चित्र :

ओड़िशी नृत्य

(ओड़िशा)

भारत नाट्यम

(तामिलनाडु)

कथकली नृत्य

(केरल)

कुचपुड़ा नृत्य

(आंध्रप्रदेश और तेलंगाना)

मणिपुरी नृत्य

(मणिपुर)

मोहिनी अट्टम्

(केरल)

कथक नृत्य

(उत्तर प्रदेश)

ढेमसा

(ओड़िशा)

भांगडा नृत्य

(पंजाब)

गरबा नृत्य

(गुजरात)

बिहू

(असम)

संबलपुरी नृत्य

(ओड़िशा)

पाठ - 13

सिर्फ पढ़ने के लिए

स्वामिभक्त सुमुख

पुराने समय में, महिंसक राज्य में जब सकुल नामक राजा का शासन था, चित्रकूट पर्वत पर एक गुफा में हंसों का बहुत बड़ा झुंड निवास करता था। एक दिन कुछ हंस आहार की तलाश में निकल पड़े ।

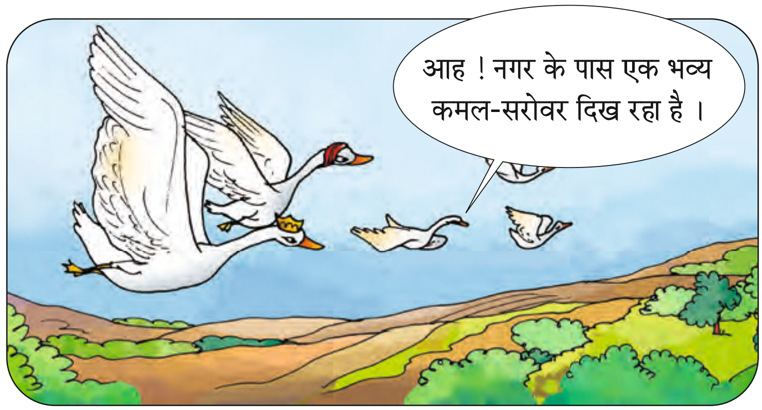

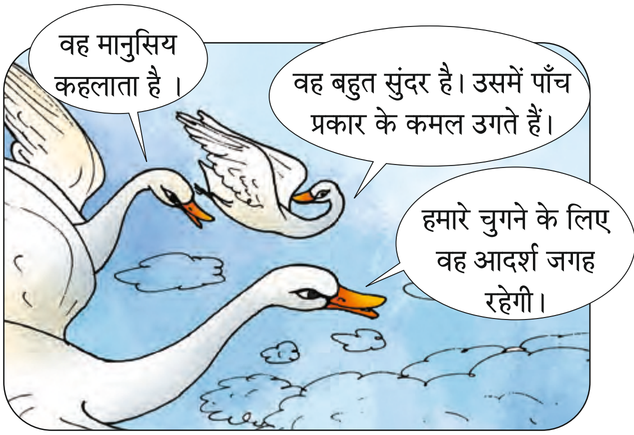

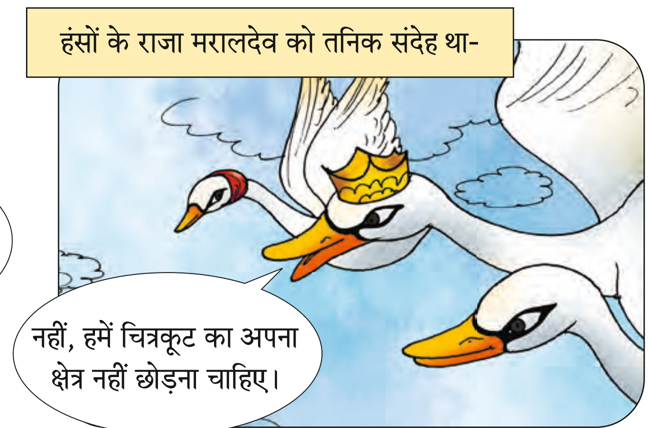

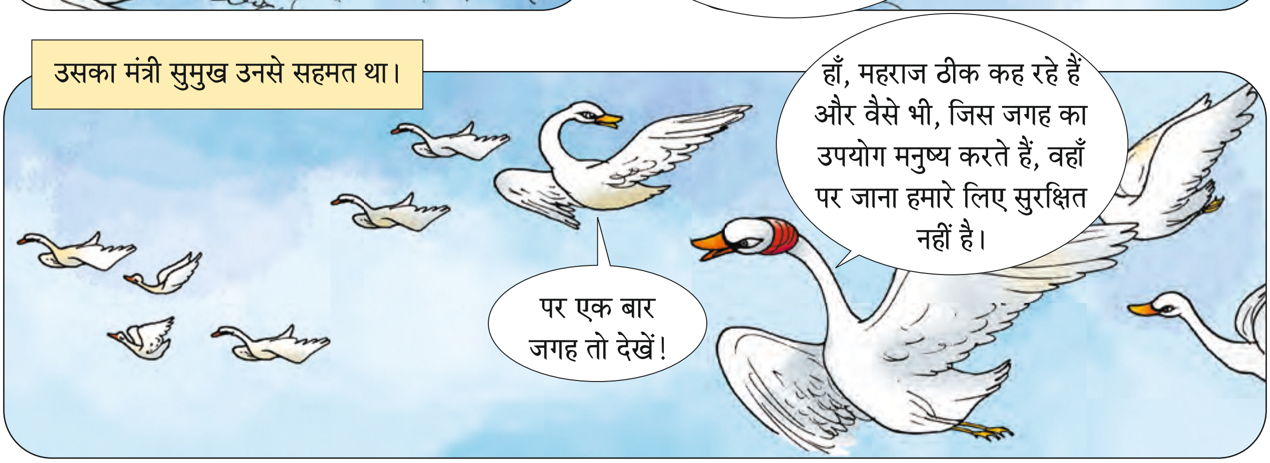

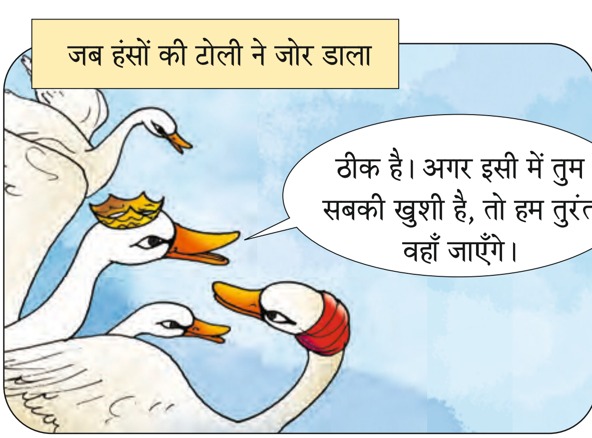

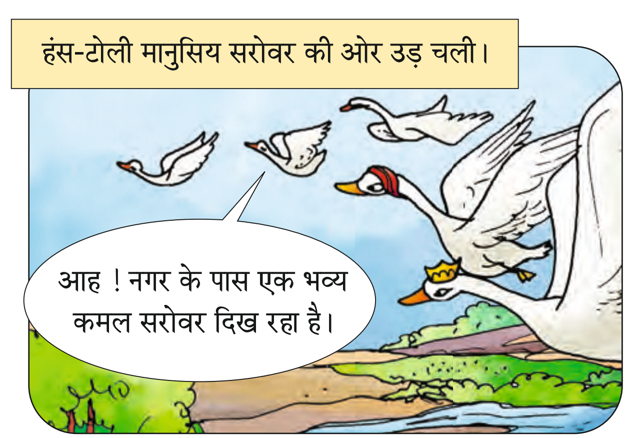

चूँकि अनेक पक्षी उस सरोवर पर आते-जाते थे, इसलिए शिकारियों का वह मनपसंद स्थान बन गया था। जब हंस-टोली सरोवर पर उतरी तो हंसों के राजा के पाँव आखेटक के जाल में फँस गए ।
ओह ! मैं तो फँस गया!
अगर मैं अभी ही चिल्ला पड़ा तो मेरे साथी बिना कुछ चुगे ही उड़ जाएँगे । बेचारे ! यहाँ पहुँचने के लिए उन्होंने कितनी लंबी उड़ान भरी है ।
और चुपचाप ही अपने पाँव छुड़ाने का प्रयास करने लगा-
मैं जितना खींचता हूँ, जाल की रस्सी मेरे शरीर में उतनी ही अधिक फँसती जाती है।
उसने शांति से इंतजार किया ।
आह ! अब वे पानी में क्रीड़ा और उछल-कूद कर रहे हैं । उन्होंने पेट-भर चुग लिया होगा ।
तब हंसों को संकट का संकेत सुनाई दिया-
आहा!
खतरे का संकेत ! चलो, जल्दी वापस चित्रकुट चलते हैं !
लेकिन पुकारा किसने था ?
यह पता लगाने का समय नहीं है । हमें अपने प्राणों की रक्षा करने के लिए यहाँ से उड़ जाना चाहिए ।
पुरी टोली में केवल एक हंस ऐसा था, जो उड़ जाने को तैयार न था और वह था- मंत्री सुमुख।
मुझे महाराज मरालदेव दिखाई नहीं दे रहे । कहीं वे तो घायल नहीं हो गए ?
चिंताग्रस्त, सुमुख सरोवर पर लौट कर गया और उसने राजा को घायल और लहूलुहान अवस्था में पाया ।

चिंता न करें, महाराज। मैं अपनी जान देकर भी आपको बंधन से छुड़ाऊँगा ।
लेकिन तुम क्यों चिंता करते हो, देखो, शेष सबके सब उड़ गए हैं। मेरे जैसे फँसे हुए पक्षी के लिए आशा ही क्या बचती है भला?
मैं आपको इस स्थिति में छोड़ने की अपेक्षा आपके साथ मर जाना अधिक पंसद करूँगा ।
लेकिन तुम्हारे इस बलिदान से हमारा या किसी और का कौन-सा प्रयोजन सिद्ध हो सकता है ?
हे पक्षियों में श्रेष्ठ, संकट की इस घड़ी में आपके साथ रहना मेरा परम कर्तव्य है।
तभी
सचमुच, ऐसा करना तुम्हारी महानता का प्रमाण है। मैं तुम्हारी स्वामीभक्ति की प्रशंसा करता हूँ। फिर भी, मैं तुम्हें जाने की अनुमति देता हूँ ।
देखो ! आखेटक इसी ओर आ रहा है ।
वाह ! कया सौभाग्य है ! आज मेरे जाल में एक साथ दो हंस फँसे हैं :
लेकिन जब वह निकट गया
अरे, तुम तो मुक्त हो ! फिर दूसरे हंस की भाँति उड़ क्यों नहीं जाते?
मैं इन्हें नहीं छोड़ सकता। ये मेरे राजा होने के साथ-साथ प्रिय मित्र भी हैं । इन्हें मुक्त कर दो और हमें जाने दो ।
लेकिन तुम तो जब चाहो जा सकते हो !
नही, मैं अकेले अपनी मुक्ति की कामना नहीं करता! सचमुच मैं तुमसे विनती करता हूँ, महाराज को छोड़ दो और बदले में मुझे पकड़ लो ।
मैं इनके समान ही आकार में बड़ा और मोटा-ताजा हूँ। इनके स्थान पर अगर तुम मुझे पकड़ लो तो तुम्हें कोई हानि नहीं होगी।
इस प्रकार सौम्यता से किंतु दृढ़तापूर्वक बातचीत करके सुमुख आखेटक का हृदय परिवर्तन करने में सफल हो गया ।
मैं तुम्हारी स्वामीभक्ति देखकर अत्यंत प्रभावित हूँ । जाओ, मैं तुम्हारे राजा को मुक्त कर देता हूँ ।
बड़ी कोमलता से आखेटक ने हंस के फँसे हुए पाँव को छुड़ाया और उसके जख्मों को धोकर साफ किया।
धन्यवाद! तुम भी सदा सुखी रहो।

हे महाराज! इस आखेटक ने हमें छोड़कर हम पर बहुत उपकार किया है।
यह चाहता तो हमें क्रीड़ा हंस बनाकर यहाँ के राजा को भेंट करके पुरस्कार पा सकता था या हमें मारकर हमारा माँस बेच सकता था। आप इस आखेटक की ओर से यहाँ के राजा से बात क्यों नहीं करते।
हमें अपने राजा के पास ले चलो!
लेकिन ऐसा करना संकट से खाली नहीं है। राजा तुम्हें पालतू बनाकर बंधन में रख सकते हैं या मरवा भी सकते हैं।
तुम्हारा हृदय परिवर्तन हो गया। हो सकता है कि तुम्हारे राजा भी कठोर हृदय वाले न हों।
आखेटक दोनों हंसों को राजा सकुल के पास ले गया।
ये दोनों उत्तम हंस हैं, महाराज यह हंसों के राजा और उनके सेनापति हैं ।
ये तुम्हारे हाथ कैसे लगे?
तब आखेटक ने सारा किस्सा सुनाया-
इन्हें सोने के आसन पर बैठाया जाए। इनके लिए शहद और मिसरी का प्रबंध किया जाए।
जब हंसों का खाना हो गया
हंसो! मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूँ?
हे राजा! इस आखेटक ने कृपापूर्वक हमें मुक्त किया। हम आपके पास इसे पुरस्कार दिलवाने के लिए आए हैं।
राजा ने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली।
मैं तुम्हें एक घर, रथ, भरपूर सोना दे रहा हूँ और तुम्हारे लिए एक लाख की आय की व्यवस्था करता हूँ।
राजा सकुल की अनुमति लेकर हंसों का राजा मरालदेव और सुमुख अपने झुंड में वापस आ गए।
आप कैसे मुक्त हुए?
यह सब मेरे सेनापति सुमुख की समझदारी और और निष्ठा के कारण संभव हुआ। उसने मुझे बचाने के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा दी ।

पाठ - 14

पहली बूँद

वह पावस का प्रथम दिवस जब,
पहली बूँद धरा पर आई ।
अंकुर फूट पड़ा धरती से,
नव-जीवन की ले अँगड़ाई ।

धरती के सूखे अधरों पर
गिरी बूँद अमृत-सी आकर ।
बसुंधरा की रोमाबली-सी,
हरी दूब पुलकी-मुसकाई ।
पहली बूँद धरा पर आई ।।

आसमान में उड़ता सागर,
लगा बिजलियों के स्वर्णिम पर ।
बजा नगाड़े जगा रहे हैं
बादल धरती की तरुणाई ।
पहली बूँद धरा पर आई ।।

नीले नयनों-सा यह अंबर,
काली पुतली-से ये जलधर ।
करुणा-विगलित अश्रु बहाकर,
धरती की चिर प्यास बुझाई ।
बूढ़ी धरती शस्य-श्यामला
बनने को फिर से ललचाई ।
पहली बूँद धरा पर आई ।।

– गोपालकृष्ण कौल

कवि परिचय :

धरती के सूखे अधरों पर 'पहली बूँद' के गिरने का अद्भूत दृश्य रचने वाले बाल साहित्यकार गोपालकृष्ण कौल (1923-2007) ने बच्चों के लिए देश-प्रेम, प्रकृति और जीव-जंतुओं से जुड़ी बहुत-सी मनोरम कविताएँ लिखी हैं। अपनी एक अन्य कविता 'हम कुछ सीखें में' वे कहते हैं - ''देश हमें देता है सबकुछ, हम भी तो कुछ देना सीखें।''

शब्दार्थ :

पावस - वर्षा ऋतु

अंकुर - अँखुआ, बीज से निकलने वाले नए पत्ते

अँगडाई - जम्हाई

वसुंधरा- वसुधा, धरती

रोमावली - रोएँ

पुलकी - पुलकित होना, रोमांचित होना

स्वर्णिम - सुनहला

नगाड़े - डंका, दुंदुभि

अंबर - आकाश

जलधर - बादल

अश्रु - आँसू

चिर - दीर्घकालिक

शस्य - फसल

श्यामला - हरी-भरी

धरा - धरती

बातचीत के लिए :

1. धरती पर वर्षा की जब पहली बूँदें आती हैं, तब आपको कैसा सुखद अनुभव होता है, सहपाठियों के साथ चर्चा कीजिए।
2. वर्षाकाल में आसमान में उड़ते बादल आपको कैसे लगते हैं, अपना अनुभव व्यक्त कीजिए।
3. वर्षा होने पर धरती पर कैसा-कैसा परिवर्तन दिखता है, इस विषय पर कक्षा में लघु वक्तव्य प्रस्तुत कीजिए।
4. आप स्वयं अनुभव कीजिए कि वर्षा होने पर धरती को कैसा अनुभव होता होगा ? इस पर एक लघु वक्तव्य प्रस्तुत कीजिए।

सोचिए और लिखिए :

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्पों में से चुनकर लिखिए :**

(क) कविता में 'नवजीवन की ले अँगड़ाई' किसके लिए प्रयुक्त हुआ है ?

(i) बादल

(ii) अंकुर

(iii) बूँद

(ivi) पावस

(ख) 'नीलेनयनों-सा यह अंबर, काली पुतली-से ये जलघर' में काली पुतली क्या है ?

(I) बारिश की बूँद

(ii) नगाड़ा

(iii) वृद्धा धरती

(iv) बादल

2. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :**

(क) पावस के प्रथम दिवस से आप क्या समझते हैं ?

(ख) धरती के सूखे अधरों पर वर्षा की प्रथम बूँद किस रूप में गिरती है ?

ग) 'आसमान में उड़ता सागर' का क्या अर्थ है ?

(घ) वर्षा में नीले नयनों- सा क्या दिखता है ?

(ङ) वर्षा में शस्य-श्यामला कौन हो जाती है ?

3. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :**

(क) धरती नव जीवन की अँगड़ाई कब और क्यों लेती है ?

(ख) वर्षा में पहली बूँद से धरती का हर्ष कैसे प्रकट होता है ?

ग) बादल धरती को प्यासी जानकर कैसे अपनी करुणा प्रकट करती है ?

(घ) वर्षा में धरती पर पहली बूँद के गिरने से धरती में क्या-क्या परिवर्तन दिखते हैं ?

4. **कविता की कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं । इन पंक्तियों में कुछ शब्द रेखांकित हैं । दाहिनी ओर अंकित शब्दों के भावार्थ दिए गए हैं । इनका मिलान कीजिए ।**

कविता की पंक्तियाँ	**भावार्थ**
क) आसमान में उड़ता सागर, लगा बिजलियों के स्वर्णिम पर ।	क) मेघ-गर्जना
ख) बजा नगाड़े जगा रहे हैं । बादल धरती की तरुणाई	ख) बादल
ग) नीलेनयनों-सा यह अंबर, काली पुतली-से ये जलघर	(ग) हरी दूब
घ) वसुंधरा की रोमावली सी, हरी दूब पुलकी-मुस्काई	(घ) आकाश

5. **निम्नलिखित संज्ञा शब्दों के लिए कविता में प्रयुक्त विशेषण शब्दों को छाँटकर लिखिए :**

विशेषण	**संज्ञा**
(क)	दिवस
(ख)	बूँद
(ग)	अधर
(घ)	नयन
(ङ)	पुतली
(च)	धरती

अनुमान और कल्पना :

1. कल्पना करके पाँच वाक्यों में लिखिए कि यदि किसी वर्ष बिल्कुल वर्षा न हो तो क्या-क्या परेशानियाँ आ सकती हैं ?
2. सोच-विचार कर लगभग पाँच वाक्यों में लिखिए कि वर्षा की प्रथम बूँदों के गिरने पर धरती पर और क्या-क्या परिवर्तन देखने को मिलते हैं ?

भाषा-ज्ञान :

1. निम्नलिखित शब्दों का पर्यायवाची शब्द कविता से ढूँढ़कर लिखिए :

   क) दिन........................ ख) नया...........................

   ग) आकाश........................ घ) वृद्धा...........................

2. निम्नलिखित शब्दों का विलोमार्थी शब्द कविता से ढूँढ़कर लिखिए :

   क) मरण........................ ख) गीले...........................

   ग) सूखी........................ घ) अचिर...........................

3. किसी शब्द के बाद समान अर्थ बोध कराने के लिए योजक चिह्न (-) के साथ सा, से, सी का प्रयोग होता है । यथा : बच्चा- सा, फूल-सी, ज्ञानी-से इत्यादि । कविता में से ऐसे प्रयुक्त शब्दों को छाँटकर लिखिए :

   क) ....- सी ख) ....- सी

   ग) ....- सा घ) ....- से

पाठ से आगे

1. 'पहली बूँद' कविता की भाँति अन्य वर्षाऋतु संबंधी कविता को ढूँढ़कर याद कीजिए।
2. 'वर्षाऋतु' के सौंदर्य और उसकी उपयोगिता पर सहपाठियों के संबंध में एक लघु वक्तव्य तैयार कीजिए और कक्षा में सुनाइए ।
3. बर्षाऋतु में मनाए जाने वाले पर्व-त्योहारों की एक सूची तैयार कीजिए और उनके संबंध में विशेष रूप से जानने का प्रयास कीजिए।
4. ओड़िआ भाषा में लिखी गई कुछ कविताओं का संकलन करके कक्षा में सुनाइए ।

पाठ - 15

सपनों की उड़ान

सिर्फ पढ़ने के लिए

सपने वह नहीं होते जो आप नींद में देखते हैं, सपने वह होते हैं जो आपको सोने नहीं देते। अपने सपने पूरे करने के लिए आपको जागते रहना होता है, पूरी तरह आँखें खोलकर जागते रहना होता है ।

आज जितनी संभावनाएँ हैं, उतनी अब तक के समूचे इतिहास में पहले कभी नहीं थीं । इक्कीसवीं सदी ऐसे अनुभव पैदा कर रही है जिन्हें मानव के विकास की पिछली बीस शताब्दियों में असंभव समझा जाता था । ऐसे माहौल में जब प्रौद्योगिकी और नित नई खोजों के बल पर मानव सम्भता तरक्की करती जा रही है, इंसान में छिपी संभावनाओं का भी तेजी से विस्तार होता जा रहा है। लेकिन इन अवसरों का अनुभव करने के लिए हमारे पास जो समय है वह उतना का उतना ही है और आज के युवा इसी दुविधा में हैं । युवा चाहते हैं कि उनके सामने जितने किस्म के अनुभव उपलब्ध हैं, वह सबका फायदा उठा सकें, जो कि उन्हें मिलना भी चाहिए लेकिन जैसे-जैसे दुनिया का दायरा बढ़ता जा रहा है, वैसे-वैसे हमें खुद को कुछ खास विषयों के संकरे दायरे में सीमित कर लेना पड़ रहा है । मुझे नहीं लगता कि ऐसा करना सही है । मेरा सपना है कि संसार के हर युवा को संसार के वह सारे अनुभव मिल सकें जिसकी उन्हें चाह हो। लेकिन इसे कैसे संभव बनाया जा सकता है ?

इसे संभव बनाने के दो तरीके हैं । एक तो यह कि हम कुछ ऐसा करें कि हमारे पास जो समय उपलब्ध है उसे हम बढ़ा सकें। दूसरा यह कि हमारे पास जो समय है हम उतने ही समय में जितना काम कर सकते हैं, जितना कुछ हासिल कर सकते हैं उसकी मात्रा बढ़ा दें । इन दोनों जीवन-लक्ष्यों को कैसे प्राप्त किया जाए, यह समझ लेने से दूसरी हर चीज तक पहुँचने के दरवाजे खुद-ब- खुद खुल जाएँगे । यही वह लंबी छलांग है जिसका मानवता को अब तक इंतजार था और जो हमें विकास क्रम के अगले चरण तक पहुँचा सकती है

- डॉ० ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

पाठ - 16

कदम मिलाकर चलना होगा

(सिर्फ पढ़ने के लिए)

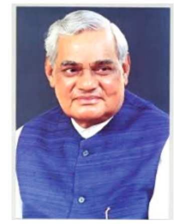

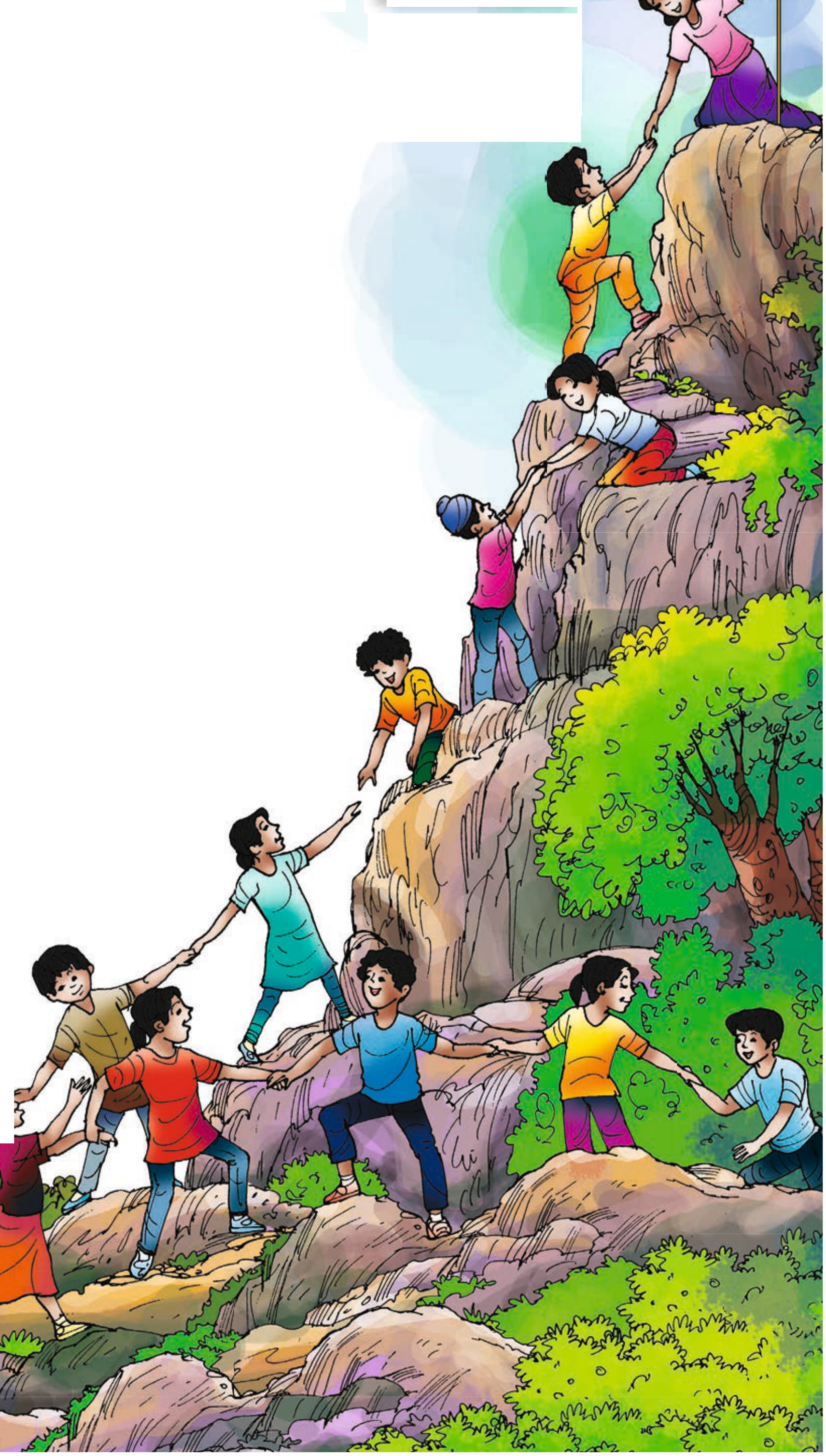

बाधाएँ आती हैं आएँ,
घिरें प्रलय की घोर घटाएँ,
पाँवों के नीचे अंगारे,
सिर पर बरसें यदि ज्वालाएँ,
निज हाथों से हँसते-हँसते,
आग लगाकर जलना होगा ।
कदम मिलाकर चलना होगा ।

हास्य-रुदन में, तूफानों में,
अमर असंख्यक बलिदानों में,
उद्यानों में, वीरानों में,
अपमानों में, सम्मानों में,
उन्नत मस्तक, उभरा सीना,
पीड़ाओं में पलना होगा !
कदम मिलाकर चलना होगा ।

उजियारे में, अंधकार में,
कल कछार में, बीच धार में,
घोर घृणा में, पूत प्यार में,
क्षणिक जीत में, दीर्घ हार में,
जीवन के शत-शत आकर्षक,
अरमानों को दलना होगा ।
कदम मिलाकर चलना होगा ।

अटल बिहारी वाजपेयी

कवि परिचय :

भारत के भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी एक सहृदय कवि के रूप में भी प्रसिद्ध हैं। आपका जन्म 25 दिसंबर 1924 को मध्य प्रदेश के ग्वालियर में हुआ था । आपने तीन बार प्रधानमंत्री पद संभाला। एक ओजस्वी वक्ता और पत्रकार के रूप में भी आप जाने जाते हैं । आपके द्वारा रचित कविताएँ हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि हैं । 'पद्म विभूषण' और 'भारत रत्न' सम्मान से भूषित वाजपेयी जी का देहावसान 16 अगस्त 2018 को हुआ था।

मुकरियाँ

सिर्फ पढ़ने के लिए :

(मुकरियाँ लेखन हिंदी साहित्य की प्राचीन और विशेष विधा है । मुकरियों का अर्थ है, कोई बात कह कर स्वयं मुकर जाना । 'मुकरियाँ' भी एक प्रकार की पहेलियाँ ही होती हैं। इनमें प्राय : चार पंक्तियाँ या चार चरण होते हैं । तीन पंक्तियों में विषय-संदर्भ होता है और चौथी पंक्ति में उत्तर स्वरूप दो अर्थ होते हैं । अमीर खुसरो और भारतेंदु हरिश्चंद्र की मुकरियाँ अधिक प्रचलित हैं ।

1. जब माँगू तब जल भरी लावे,
मेरे मन की तपन बुझावे,
मन का भारी तन का छोटा,
ऐ सखि साजन ? ना सखि लोटा ।।

2. नंगे पाँव फिरन नहिं देत,
पाँव से मिट्टी लगन नहिं देत।
पाँव का चूमा लेत निपूता,
ऐ सखि साजन ? ना सखि जूता ।।

3. अति सुरंग है रंग रंगीलो,
है गुणवंत बहुत चटकीलो ।
राम भजन बिन कभी न सोता,
क्यों सखि साजन ? ना सखि तोता ।।

4. बेर-बेर सोवताहि जगावे,
ना जागूँ तो काटे खावे ।
व्याकुल हुई मैं हक्की वक्की,
ऐ सखि साजन ? ना सखि मक्खी ।।

- अमीर खुसररे

1. सीटी देकर पास बुलावै
रुपया ले तो निकट बिठावै ।
ले भागै मोहिं खेल हिं खेल,
क्यों सखि सज्जन नहिं सखि रेल ।

2. रूप दिखावत सरबस लूटै,
फंदे में जो पड़ै न छूटै ।
कपट कटारी जिय में हुलिस
क्यों सखि सज्जन नहिं सखि पुलिस ।।

3. लंगर छोड़ि खड़ा हो झुमै,
उलटी गति प्रतिकूल हि चूमै ।
देस देस डोलै सजि साज,
क्यों सखि सज्जन नहिं जहाज ।।

4. सब गुरुजन को बुरो बतावै
अपनी खिचड़ी अलग पकावै ।
भीतर तत्व न झूठी तेजी,
क्यों सखि सज्जन नहिं अँगरेजी ।।

- भारतेंदु हरिश्चंद्र

सुडोकु - 1

निर्देश : निम्न सारिणी में दिए गए अक्षरों की सहायता से सार्थक शब्द बनाएँ।

छा	ता	ब	क	ली
का	ला	म	मे	ज
गु	ल	च	आ	ड़

______________ ______________ ______________ ______________

______________ ______________ ______________ ______________

______________ ______________ ______________ ______________

सुडोकु - 2

निर्देश : इस पहली में खाली स्थानों को १ से ९ तक अंकों से ऐसे भरें कि दाएँ से बाएँ और ऊपर से नीचे एक भी अंक दोहराया न जाए।

४		५			८			२
	९		४					
		३		६				४
१			५			२		
		२			४		८	
	३		२			५		
				७				८
	६				४			
५		९						

हिंदी के साहित्यकार

सूरदास

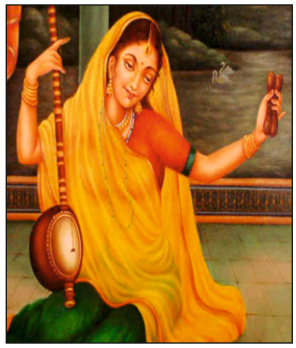

मीराबाई

बिहारी

मैथिली शरण गुप्त

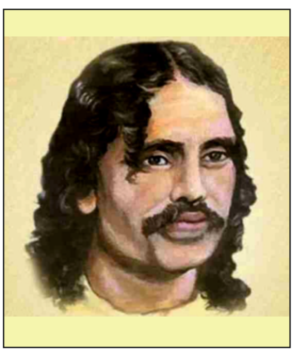

भारतेंदु हरिश्चंद्र

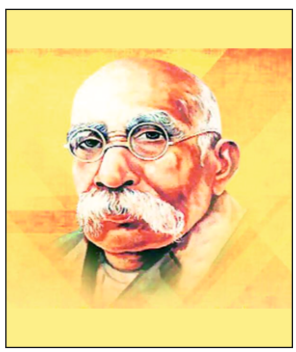

महावीर प्रसाद द्विवेदी

महादेवी वर्मा

जयशंकर प्रसाद

मन्नू भंडारी

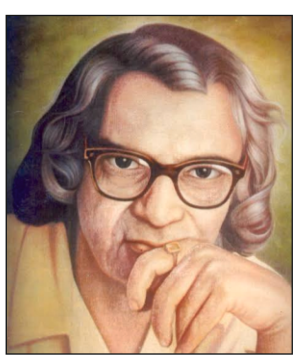

सुमित्रानंदन पंत

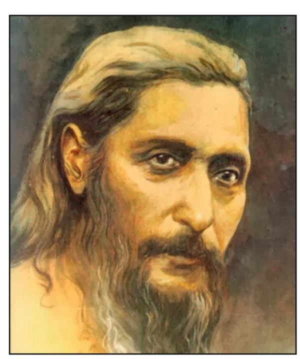

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

रामधारी सिंह दिनकर

ओड़िआ के साहित्यकार

सारला दास

जगन्नाथ दास

उपेंद्र भंज

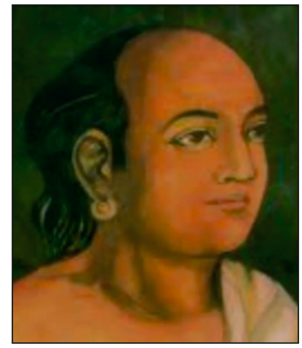
बलदेव रथ

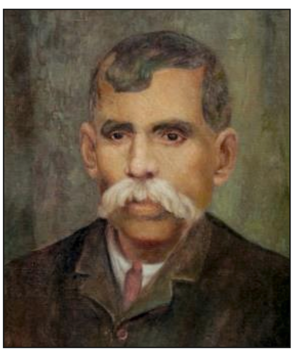
कविवर राधानाथ राय

मायाधर मानसिंह

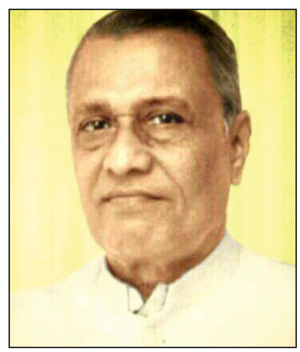
कालिंदी चरण पाणिग्राही

गोपीनाथ महांति

राधामोहन गड़नायक

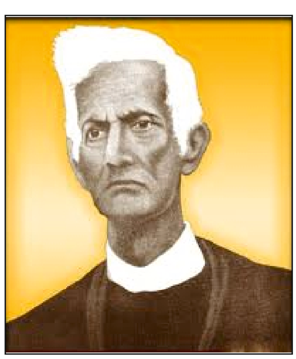
फकीर मोहन सेनापति

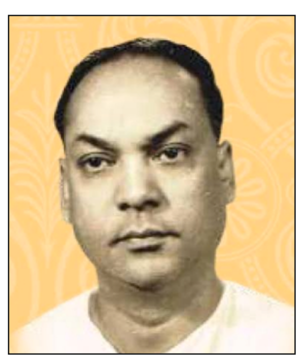
सच्चिदानंद राउतराय

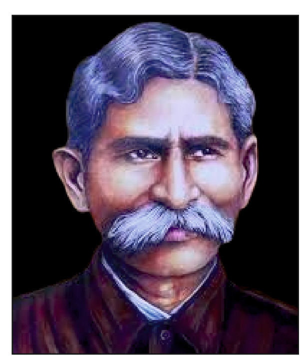
गंगाधर मेहेर

हिंदी गीत

भारत जननी एक हृदय हो।
एक राष्ट्रभाषा हिंदी में,
कोटि-कोटि जनता की जय हो।।

स्नेह-स्निग्ध मानस की वाणी,
गूंजे गिरा यही कल्याणी,
चिर उदार भारत की संस्कृति,
सदा अभय हो, सदा अजय हो।।

मिटे विषमता, सरसे समता,
रहे, मूल में मीठी ममता,
तमस-कालिमा को विदिर्ण कर,
जन-जन का पथ ज्योर्तिमय हो।।

जाति-धर्म-भाषा विभिन्न स्वर
एक राग हिंदी में सजकर,
झंकृत करे हृदय तंत्री को
स्नेह भाव प्राणों में लय हो।।
भारत जननी एक हृदय हो।।

– रामेश्वर दयाल दुबे

राष्ट्रगान

जन-गण-मन अधिनायक जय हे
भारत भाग्य-विधाता ।
पंजाब सिंधु गुजरात मराठा
द्राविड़ उत्कल बंग ।
विंध्य हिमाचल यमुना गंगा
उच्छल जलधि तरंग ।
तव शुभ नामे जागे
तव शुभ आशिष मागे
गाहे तव जय गाथा ।
जन-गण मंगल दायक जय हे
भारत भाग्य विधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे
जय जय जय जय हे ।

- रवींद्रनाथ ठाकुर